एकादशी



लेखक

राजेश्वर झा

बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना

प्रकाशक

श्री अमरनाथ झा

ग्रा० रसुआर, पो० निर्मली,

जिला० सहरसा

एकादशी

लेखक

राजेश्वर झा

बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना



प्रकाशक

श्री अमरनाथ झा

ग्रा० रसुआर, पो० निर्मली,

जिला० सहरसा

दाम : एक टाका पचास पैसा

मुद्रक
श्री कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस,
आर्यकुमार रोड, पटना-४

एकादशी



पंडित श्री लक्ष्मीकान्त झा
उप-संरक्षक
बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना

उपहार

स्मृति, संविधान ओ दंडनीतिक कठोर तथ्यक विश्लेषण
से क्लान्त मोन कें शीतल मनोवार्य कथा-
श्रवणक महान् प्रेमी पंडित श्री लक्ष्मी
कान्त झाजीक कर कमल मे
सादर भेंट।

—राजेश्वर झा

प्राक्कथन

संस्कृत साहित्य मे अलंकारी लोकनि गद्यकाव्यक दुइ भेद—कथा एवं आख्यायिका रूप मे मानलैन्ह अछि। अमरकोषक 'आख्यायिकोपलब्धार्था',एवं 'प्रबन्धकल्पना कथा' वाक्यक अनुसार जकर कथावस्तु सत्य होइछ ओ आख्यायिका तथा जकर कथावस्तु कल्पित होइछ ओ कथा थिक। अग्निपुराणक अनुसार आख्यायिका ओकरा कहल जाइछ जाहि मे कन्याहरण, संग्राम, विप्रलंभ इत्यादि विपत्तिक वर्णन पूर्वक शैलीक प्राबल्य, तथा वक्त्र एवं अपवक्त्र नामक श्लोक पाओल जाइछ और कथा ओ थिक जाहि मे कथिक वंशक आरम्भ मे संक्षिप्त वर्णन एवं मुख्यार्थक अवतारणाक हेतु आमुख रूप मे अन्य कथाक योजना होइछ तथा परिच्छेदक विभाजन नहि भए यथास्थान लम्बक रहैछ।

सरस कथाक सूत्रपात भारतवर्ष मे प्रायः संस्कृति ओ सभ्यताक संगहि भेल। ऋग्वेदक कतिपय कथा रामायण, महाभारत एवं पुराण मध्य पाओल जाइछ। यास्क अपन निरुक्त मे अत्यन्त प्रारम्भे सँ वैदिक कथाक अस्तित्वक स्वीकार केनिहार पौराणिकक एक गोट सम्प्रदायक चर्चा कएलैन्ह अछि। कथाक विन्यास मे संहिता, ब्राह्मण एवं उपनिषदक अतिरिक्त शौनकीय बृहद्देवता तथा नीतिमंजरीक आश्रय लेल गेल। वस्तुतः बृहद्देवतहिँ वैदिक कथा केँ स्पष्ट करैत अछि।

प्राचीनकालक कथा-साहित्य मे जातक-कथा केँ सभ सँ प्राचीन तथा सर्वापिक्षा पैघ मानल जाइछ। जातक शब्दक अर्थ होइछ जन्म सम्बन्धी। एहि कथा मे भगवान बुद्धक पूर्व जन्म सँ सम्बन्धित पाँच सए सैतालिस जन्मक उल्लेख पाओल जाइछ।

जातक-कथाक रचयिता, संग्रहकर्त्ता वा अनुवादकक प्रसंग मे विद्वान एकमत नहि छथि। महावंस एवं जातकट्ठकथाक अनुसार बुद्धघोष वा बुद्धमित्र एहि कथाकेँ संग्रह कएलैन्ह।

जातक-कथाक अन्तिम संग्रह वा सम्पादन भने किओ कएने होथु मुदा एहि मे कतिपय एहनो कथा अछि जे भगवान बुद्ध सँ पूर्वक मानल जाइछ। जातक कथाक सम्बन्ध जन साधारण सँ एवं उद्देश्य शिक्षण भेला सन्ता एहि मे बौद्ध एवं अबौद्ध दुहूक कथाक साम्यता पाओल जाइछ जे एके प्राचीन परम्पराक सूचि थिक। अतएव एके कथा बौद्धक हाथ मे पड़ि बौद्ध तथा अबौद्धक हाथ मे पड़ि अबौद्ध रूप धारण कएलक।

जहाँ धरि पालि वाङ्मयक सम्बन्ध अछि एहि कथा सँ किछु त्रिपिटक मे स्वतंत्र रूप मे आएल अछि। महावंसक अनुसार ईस्वी सनक प्रथम शताब्दी मध्य त्रिपिटकक रचना भेल। किन्तु एहि सँ बहुत पूर्वहिँ जातकक कतिपय कथा अपना नामक संग भरहुतक स्तूप पर अंकित कएल गेल जकर निर्माण ईस्वी सन् द्वितीय शताब्दी पूर्व

मे भेल। अतः ई निर्विवाद अछि जे जातक-कथा ईसा पूर्व पाँचम शताब्दीक पूर्व सँ लए ईसाक द्वितीय शताब्दी पश्चातक मध्य धरि संग्रह कएल गेल।

जातक-कथाक ऐतिहासिक मूल्य भने कम हो मुदा मानव जीवन सँ सम्बन्धित प्रायः प्रत्येक विषयक निरूपण एहि मे पाओल जाइछ। जातक-कथा मे उठब-बैसब, खाएब-पीयब, ओढ़ब-पहिरब इत्यादि साधारण विषय सँ लए शिल्पकला, व्यापार, अर्थनीति, राजनीति, एवं समाज संगठनक विस्तृत इतिहास पाओल जाइछ। अतः एहि कथा सँ सामग्री लए परवर्ती कथा-साहित्यक रचना भेल।

ईसाक प्रथम-द्वितीय शताब्दीक मध्य कथा-साहित्य एक नव मोर लएलक। ओ आन्ध्र-सातवाहनक युग छल। ओहि युगक व्यापारीक देशान्तर भ्रमणक अनुभवक आधार पर तत्कालीन वृहत्तर भारतक रूप, भौगोलिक स्थितिक संग भिन्न-भिन्न देशक लौकिक रीति-रेवाज आदिक समावेश गुणाढ्य नामक एक पंडित अपन "वृहत्कथा" नामक ग्रंथ मे कएलैन्ह।

गुणाढ्यक "वृहत्कथा" तँ एहि समय दुष्प्राप्य अछि मुदा बाणक हर्षचरित, दण्डीक काव्यादर्श, क्षेमेन्द्रक वृहत्कथामंजरी तथा सोमदेवक कथासरित्सागर मे एहि ग्रंथक चर्चा आएल अछि।

गुणाढ्यक "वृहत्कथाक" प्रख्याति समय पाबि व्यास कृत महाभारत सदृश एहि देशक काव्य एवं कथा साहित्य मे भेल। सोमदेव तँ अपन कथा सरित्सागरक रचना "वृहत्कथे" सँ सामग्री लए कएलैन्ह जाहि मे कतिपय जातक-कथा विद्यमान अछि।

प्रसिद्ध पञ्चतंत्रक अधिकांश कथाक आधार जातकहिं मे पाओल जाइछ तथा एहि सँ सहायता लए हितोपदेशक रचना कएल गेल। जैन वाङ्मय मे सेहो कथाक समावेश अछि जे कोनो ने कोनो रूपें जातक-कथा सँ साम्य अछि। कथा साहित्य मे "बैताल पञ्चविंशति", "सिंहासन द्वात्रिंशिका", "शुकसप्तति" आदि ग्रंथ प्रमुख अछि।

कथाक उद्देश्य महज मनोरञ्जने नहि भए मानवजीवनक परम लक्ष्यक प्राप्ति सेहो होइछ। कथा-साहित्य मनुष्यक सभ सँ जटिल समस्या कामवासना एवं विशुद्ध शाश्वत प्रेमक तारतम्य कें बोध कराए जीवन दर्शन मे प्रत्यक्ष करबैछ। एहि कामतत्वक लौकिक एवं अलौकिक दुइ गोट भेद अछि। लौकिक कामतत्व सामान्य वासना तथा अलौकिक शुद्ध प्रेम होइछ। वासना अनित्य एवं बन्धनक कारण तथा शुद्ध प्रेम नित्य एवं शक्तिदायक थिक। तपस्याक माध्यम सँ वासनात्मक लौकिक प्रेम कें धरातल सँ उपर उठाए विशुद्ध अलौकिक प्रेमक पवित्र भूमि तक मानवक भावना कें पहुँचाएब एहि कथा-साहित्यक उद्देश्य होइछ।

शिक्षाक उद्देश्य सँ कथा साहित्यक कम महत्व नहि पाओल जाइछ। 'न धर्मशास्त्रं पठतीति कारणम्' वाक्य एहि मान्यता कें स्वीकार करैछ तथा मानव-स्वभाव कें संस्कार तथा बुद्धि परिपाकक हेतु शास्त्राध्ययनक अतिरिक्त गुरूपदेश, सज्जनक संगति एवं शिष्टजनक अनुकरणहु आवश्यक होइछ। अतएव मनुष्यक कर्तव्यक निर्देशनक हेतु मानव जीवनक दुहू पक्ष सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञानक समुचित उपयोगक दिग्दर्शन कथा-साहित्य मे पाओल जाइछ। कथा-साहित्य मध्य

मानव स्वभावक गुण-दोषक विवेचना एहि हेतु कएल गेल अछि जे मनुष्य गुणक संग्रह तथा दोषक परित्याग कए अपन जीवन आदर्शमय बनावए।

कथा-साहित्य मध्य वर्णित विद्याधर, यक्ष, गंधर्व आदिक कथा प्रधानतः पाओल जाइछ। एहि प्रसंग मे अमरकोषक—

"विद्याधराप्सरो यक्षरक्षो गंधर्वकिंनराः
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः।।"

वाक्य मे एहि जाति के दिव्य जाति कहल गेल अछि जे वाल्मीकिक गंगाष्टक एवं कालिदासक मेघदूत सँ पुष्टि होइछ। एहि ग्रंथ सभक मध्य सिद्धांगना वा सिद्ध वधुक वर्नन सेहो पाओल जाइछ। सर्वदर्शनसंग्रहक अध्ययन सँ प्रतीत होइछ जे रसेश्वरवादी जीवन-मुक्ति एवं अजरामरत्वक साधक छलाह। पारद् (शिव) एवं अभ्रकक (शक्तिक) मिश्रण सँ मृत्यु तथा दारिद्र्यक विनाश, जीवन-मुक्ति तथा अजरामरत्वक साधना कए सिद्ध बननिहार केँ रसेश्वर सिद्ध कहल जाइत छल जकर भिन्न-भिन्न प्रकारक परम्परा छलैक। एहि परम्परा मध्य नवकोटि सिद्ध सेहो पाओल जाइत छल। एहि प्रसंग मे कहल जाइछ जे नवकोटि सिद्ध लोकनि ओहि चीनी ताओ धार्मिकक उपभोग सँ प्रभावित छलाह जे प्रायः चीन सँ ईसाक पूर्वक कोनो शताब्दी मध्य यात्री बनि भारत अएलाह जनिका सँ दक्षिण भारतक शैवागम एवं शाक्तागम प्रभावित भेल। ई लोकनि पाछाँ शुद्ध मार्गी नाम सँ प्रख्यात भेलाह। शुद्ध मार्गीक अनुसार पूर्ण सिद्ध ओ कहल जाइछ जे अपना शरीर केँ कायासाधन सँ पूर्ण वश कए सतत् अदृश्य रूप मे रहैत छलाह।

निःसंदेह कथासरित्सागर मध्य ओहि सिद्ध लोकनिक कथा अछि जे सिद्धि प्राप्तिक हेतु दिव्यजातिक सिद्धांगना वा सिद्ध वधुक उपभोग कए पूर्ण सिद्ध बनैत छलाह।

अतएव कथा साहित्यक उद्देश्य मात्र मनोरञ्जने टा नहि भए शिक्षा सेहो होइछ। एहि दृष्टकोण केँ अपनाए 'एकादशी' लिखल अछि। एहि मे एगारह गोट शिक्षाप्रद ओ रोचक कथाक संग्रह अछि जे संहिता, जातक तथा कथासरित्सागर सँ उद्धृत कएल गेल अछि। एहि मे वर्णित कथा केँ हम स्वाभाविकता ओ रोचकता दुहू केँ दृष्टि मे राखि अपन स्वेच्छा सँ कतहु कम तथा कतहु बेसी कए अपना शब्द मे लिखल अछि। अतः एहि कथा केँ अनुवाद कहब अनुचित होएत। अनुवाद तँ ओ कहल जाइछ जाहि मे सम्पूर्ण मूलक भाषान्तर मे प्रतिपादन कएल जाए।

अन्त मे विज्ञप्ति जे ई कथा हम मात्र एहि उद्देश्य सँ लिखए लगलहुँ जे एहि विलक्षण कथाक रोचकता मे हमर अल्पज्ञानक त्रुटि एवं भाषा, भाव ओ आन-आन तरहक दोष सभ झँपि जाएत। आशा करैत छी जे विद्वान लोकनि एकर त्रुटि दिसि ध्यान नहि दए केवल कथामृतक रसास्वादन करताह।

—राजेश्वर झा

७-६-१९६० ई०

विषय-सूची

भाग्यक फल

मालव देश मे यज्ञसेन नामक एक ब्राह्मण छलाह। हुनका कालनेमि तथा विगतभय नामक दुइ गोट पुत्र छलथिन्ह।

यज्ञसेनक मृत्यु असमय मे भेलैन्ह तथा पिताक मृत्युक उपरान्त ओ दुहू भ्राता विद्या प्राप्तिक हेतु पाटलिपुत्र जाए देवशर्मा सँ विद्या ग्रहण कएलैन्ह। विद्या-प्राप्तिक पश्चात् देवशर्मा ओहि दुहू भ्राताक व्याह अपन दुहू कन्याक संग कए देलथिन्ह।

विवाहक उपरान्त कालनेमि केँ धनक स्पृहा भेलैन्ह तथा ओ अपन पड़ोसी केँ अधिक सम्पन्न देखि ईर्ष्यावशात् जरए लगलाह। अतएव धनक अभिलाषार्थं ओ लक्ष्मीक आराधना कए विधिवत होमक द्वारा लक्ष्मी केँ प्रसन्न कएलैन्ह। लक्ष्मी हुनक अर्चना सँ प्रसन्न भए स्वतः हुनक समक्ष प्रकट भेलीह तथा कालनेमि केँ वरदान दए कहलथिन्ह "अहाँ पर्याप्त ऐश्वर्यशाली एवं पृथ्वी पति पुत्र केँ तँ प्राप्त करब मुदा अहाँ द्वारा अग्नि मे देल हवन ईर्ष्या सँ दूषित भेला सन्ता कलुषित छल। अतः अहाँक मृत्यु सुखद नहि होएत।"

कालक्रमेँ कालनेमि अत्यन्त धनीक भए गेलाह तथा हुनका एक गोट पुत्र सेहो जन्म लेलथिन्ह जनिक नाम ओ श्रीदत्त राखलथिन्ह।

समय पाबि श्रीदत्त बढ़ए लगलाह तथा ब्राह्मण होएतहुँ ओ अस्त्र-शस्त्र एवं मल्ल युद्ध मे प्रवीणता प्राप्त कएलैन्ह।

कालनेमिक कनिष्ट भ्राता विगतभयक पत्नीक साप काटला सँ मृत्यु भए गेलैन्ह। अतः ओ अपन पत्नीक सद्गतिक निमित्त तीर्थ यात्राक हेतु अन्यत्र चल गेलाह।

श्रीदत्तक पराक्रम एवं वीरता आदि गुण केँ देखि राजा वल्लभशक्ति हुनका अपन पुत्र विक्रमशक्तिक मित्र बनाओल। तदन्तर अवन्ति देशक बाहुशाली तथा वज्रमुष्टि नामक दुइ गोट क्षत्रिय वीर श्रीदत्तक मित्र बनि गेलाह। एहि तरहेँ महाबल, व्याघ्रभट एवं निष्ठुरक आदि अनेक पराक्रमी व्यक्ति श्रीदत्तक मित्र भए गेलाह।

एक समय राजपुत्रक संग श्रीदत्त तथा हुनक अन्य मित्र लोकनि गंगाक तट पर विहारक हेतु गेलाह। ओतए विनोद मे राजकुमार विक्रमशक्तिक संग श्रीदत्त एवं

हुनक मित्र लोकनि कें अनघन भए गेलैन्ह। अतः श्रीदत्त अपन मित्रक संग विक्रमशक्ति कें एकसरे छोड़ि ओतए सँ अन्यत्र चल गेलाह।

श्रीदत्त एवं हुनक मित्र लोकनि गंगाक तटपर ठाढ़ भए गंगाक अविराम धारा कें देखैत छलाह। एहि अभ्यन्तर श्रीदत्त सहसा गंगाक जल मध्य एक अत्यन्त स्वरूपवती स्त्री कें बहैत देखि अपन मित्र लोकनि कें ओतए छोड़ि जल मध्य कुदि पड़लाह। ओ अत्यन्त तत्परता सँ डुबनिहारिक केश तँ पकड़लैन्ह मुदा स्वतः ओ जल मध्य डुबि गेलाह।

डुबलाक उपरान्त श्रीदत्त क्षणमात्रहि मे एक शिव मंदिर कें देखलथिन्ह जतए ने तँ जले छलैक आने ओ स्त्रीये छलीह। श्रीदत्त ओतए राति बितौलैन्ह। प्रातःकाल स्त्रीलोकनिक मध्य ओहो स्त्री ओहि मंदिर मे महादेवक पूजनार्थ अएलीह।

पूजाक उपरान्त ओ सुन्दरि अपन गृह कें प्रस्थान कएलीह। श्रीदत्त सेहो हुनका पाछू-पाछू ओतए गेलाह। अपन गृह पहुँचि ओ स्त्री एक दिव्य भवन मे प्रविष्ट भेलीह तथा आन-आन स्त्रीक मध्य एक विलक्षण पलंग पर बैसलीह। श्रीदत्त सेहो ओतए जाए ओहि पलंगक एक छोड़ पर बैसलाह।

श्रीदत्त कें ओतए देखि ओ सुन्दरि अनायासहिं कानए लगलीह। श्रीदत्त ओकर कानब सुनि ओहि स्त्री सँ पुछलथिन्ह "हे देवि! अहाँ के छी? तथा अहाँ कें कोन वस्तुक कष्ट अछि?"

श्रीदत्तक कथा सुनि ओ स्त्री व्यथित भए बजलीह "हमरा लोकनि दैत्यराज बलिक एक सहस्र पौत्री थिकहुँ। एहि मे सभ सँ जेठ विद्युत्प्रभा हम छी। विष्णु हमर पिता कें मल्लयुद्ध मे मारि हमर पितामह कें कैद कएने छथि तथा हमरा लोकनिक नगर प्रवेशहुँ पर रोक लगौने छथि। ओ एहि हेतु एक पराक्रमी सिंह कें नगर मध्य तैनात कएने छथि जे कुबेरक श्रापक कारणे पशु सँ सिंह भेल अछि। एहि सिंहक मुक्ति मनुष्य द्वारा होएत। अतः हम एहि स्थान पर अहाँ कें अनलहुँ अछि। अहाँ एहि सिंह कें मारि ओकर मृगांग नामक खड्ग प्राप्त करू जकर प्रभाव सँ पृथ्वीक राज्य अहाँ प्राप्त करब।" श्रीदत्त कें ओ स्त्री साक्षात् लक्ष्मीसन तथा ओकर वचन अमृत सन बुझना गेलैन्ह।

प्रातःकाल श्रीदत्त ओहि सिंहक संग मल्लयुद्ध मे सिंह कें मारि देल जे तत्क्षणे श्राप विमुक्त भए दिव्य रूप मे परिणत भए गेलाह तथा ओ श्रीदत्त कें एक खड्ग दए अदृश्य भए गेलाह। तत्पश्चात् श्रीदत्त पुनः विद्युत्प्रभाक समक्ष गेलाह। विद्युत्प्रभा श्रीदत्त कें विषनाशक एक गोट औंठी दए एक सरोवर मे स्नान करए कहलथिन्ह। श्रीदत्त विद्युत्प्रभाक कथनानुसार जखनहि ओहि सरोवर मे डुबकी देलैन्ह कि ओ तत्क्षण गंगाक ओही घाट पर पुनः आबि गेलाह जतए ओ गंगाक जल मध्य प्रवेश कएने छलाह।

गंगाक तट पर अपना कें पाबि श्रीदत्त कें अत्यन्त विस्मय तें होइते छेलैन्ह संगहि रूप एवं लावण्यक साक्षात् प्रतिमा सँ वियोग भेला सम्ता नितान्त खिन्न एवं चकित भए ओ चौतए सँ अपन गृह कें प्रस्थान कएलैन्ह। मार्ग मे श्रीदत्त कें निष्ठुरक भेटलथिन्ह। कुशल-क्षेम भेलाक उपरान्त निष्ठुरक कहल जे "राजा अस्वाभाविक मृत्यु भए गेलैन्ह तथा हुनक मृत्युक पश्चात् विक्रमशक्ति एहि नगरक राजा भेलाह। राज्य चलितहिँ विक्रमशक्ति मद से चूर भए अहाँक घर आए अहाँक पिता सँ अहाँक प्रसंग मे पुछलथिन्ह। अहाँक पिताक उत्तर सँ जे "हम नहि जनैत छी" ओ अत्यन्त क्रुद्ध भए गेलाह तथा हुनका ओ फाँसी दए देलथिन्ह। अहाँक माए पतिक वियोग मे सेहो अपन प्राण दए देलैन्ह। आब ओ अहाँ एवं हमरा लोकनिक वधक युक्ति मे लागल छथि। अतएव हमरा लोकनि उज्जयिनी चल गेल छी। अहाँ सेहो ओतए चलू।"

माँता पिताक मृत्युक प्रसंग मे जानि श्रीदत्त कें अशीम दुख भेलैन्ह। ओ फूटि-फूटि कें कानए लगलाह तथा प्रतिशोधक भावना मे लीन भए कोनो आन प्रतिकार नहि जानि उज्जयिनी कें ओरा प्रस्थान कएलैन्ह।

मार्ग मे श्रीदत्त कें एक असहाय अबला स्त्री भेटलथिन्ह जे मालवदेशाक मार्ग बिसरि गेला सँ कनैत छलीह। एहि स्त्री कें देखि श्रीदत्त कें दया भेलैन्ह। अतः ओ एहि स्त्री कें अपन संग कए लेलथिन्ह।

किछु दूरक यात्राक उपरान्त एक दिन अकस्मात् राति कें उठलाक पश्चात् श्रीदत्त ओहि स्त्री कें निष्ठुरक कें मारि ओकर माँस खाइत देखलथिन्ह। श्रीदत्त तुरन्त अपन मृगांक खड्ग कें म्यानि ओकर वधक हेतु तत्पर भए गेलाह। ओ स्त्री अपन स्वरूप कें छोड़ि राक्षसीक रूप मे बदलि गेलीह। श्रीदत्त ओकरा मारबाक हेतु जहिना ओकर केश पकड़लथिन्ह कि तत्क्षण ओ राक्षसीक रूप छोड़ि एक दिव्य स्त्रीक स्वरूप धारण कए श्रीदत्त सँ कहए लगलीह "हे पुरुष! हम राक्षसी नहि छी। हमर एहि तरहक अधोगति कौशिक मुनिक श्रापक कारणेँ भेल अछि। एक समय कौशिक मुनिक तपस्या मे विघ्न डालबाक हेतु कुबेरक आदेश सँ हम नाना प्रकारक अलंकार सँ अलंकृत भए गेलहुँ। हमर रूप एवं लावण्य जखन हुनका नहि मोहित कए सकल तँ अपन अंतरक अनादर पूर्ति हुनका डरेबाक हेतु राक्षसीक भीषण रूप धारण कएल। हमर कृति सँ मुनि कें अत्यन्त क्रोध भेलैन्ह। अतएव ओ हमरा श्राप देलैन्ह जे "तू राक्षसी भए मनुष्यक माँसक भक्षण कएल करऽ।" मुनिक श्राप सुनि मुनिक अनुनय विनय कएल तथा मुनि हमर श्रापक अन्त अहाँ द्वारा केश पकड़ला सँ कहलैन्ह। अहाँ हमर श्रापक अन्त कएल। अतः अहाँ हमरा सँ वरदान माँगू।" श्रीदत्त कहलथिन्ह जे "हम अहाँ सँ दोसर वर कोन माँगए? अँ

गंगाक तट पर अपना कें पाबि श्रीदत्त कें अत्यन्त विस्मय तें होएबे केलैन्ह संगहि रूप एवं लावण्यक साक्षात् प्रतिमा सँ वियोग भेला सन्ता नितान्त खिन्न एवं चकित भए ओ ओतए सँ अपन गृह कें प्रस्थान कएलैन्ह। मार्ग मे श्रीदत्त कें निष्ठुरक भेटलथिन्ह। कुशल-क्षेम भेलाक उपरान्त निष्ठुरक कहल जे "राजा वल्लभशक्तिक मृत्यु भए गेलैन्ह तथा हुनक मृत्युक पश्चात् विक्रमशक्ति एहि नगरक राजा भेलाह। राज्य पबितहिं विक्रमशक्ति मद मे चूर भए अहाँक गृह जाए अहाँक पिता सँ अहाँक प्रसंग मे पुछलथिन्ह। अहाँक पिताक उत्तर सँ जे "हम नहि जनैत छी" ओ अत्यन्त क्रुध भए गेलाह तथा हुनका ओ फाँसी दए देलथिन्ह। अहाँक माए पतिक वियोग मे सेहो अपन प्राण दए देलैन्ह। आब ओ अहाँ एवं हमरा लोकनिक वधक युक्ति मे लागल छथि। अतएव हमरा लोकनि उज्जयिनी चल गेल छी। अहाँ सेहो ओतए चलू।"

माता-पिताक मृत्युक प्रसंग मे जानि श्रीदत्त कें असीम दुख भेलैन्ह। ओ फूटि-फूटि कें कानए लगलाह तथा प्रतिशोधक भावना मे लीन भए कोनो आन प्रतिकार नहि जानि उज्जयिनी कें ओहो प्रस्थान कएलैन्ह।

मार्ग मे श्रीदत्त कें एक असहाय अबला स्त्री भेटलथिन्ह जे मालवदेशक मार्ग बिसरि गेला सँ कनैत छलीह। एहि स्त्री कें देखि श्रीदत्त कें दया भेलैन्ह। अतः ओ एहि स्त्री कें अपन संग कए लेलथिन्ह।

किन्तु दूरक यात्राक उपरान्त एक दिन अकस्मात् सुति कें उठलाक पश्चात् श्रीदत्त ओहि स्त्री कें निष्ठुरक कें मारि ओकर माँस खाइत देखलथिन्ह। श्रीदत्त तुरन्त अपन मृगांग खड्ग कें खीँचि ओकर वधक हेतु तत्पर भए गेलाह। ओ स्त्री अपन स्वरूप कें छोड़ि राक्षसीक रूप मे बदलि गेलीह। श्रीदत्त ओकरा मारबाक हेतु जहिना ओकर केश पकड़लथिन्ह कि तत्क्षण ओ राक्षसीक रूप छोड़ि एक दिव्य स्त्रीक स्वरूप धारण कए श्रीदत्त सँ कहए लगलीह "हे पुरुष! हम राक्षसी नहि छी। हमर एहि तरहक अधोगति कौशिक मुनिक शापक कारणे भेल अछि। एक समय कौशिक मुनिक तपस्या मे विघ्न डालबाक हेतु कुबेरक आदेश सँ हम नाना प्रकारक अलंकार सँ अलंकृत भए गेलहुँ। हमर रूप एवं लावण्य जखन हुनका नहि मोहित कए सकल तँ अपन खीसक अनादर बूझि हुनका डरेबाक हेतु राक्षसीक भीषण रूप धारण कएल। हमर कृति सँ मुनि कें अत्यन्त क्रोध भेलैन्ह। अतएव ओ हमरा शाप देलैन्ह जे "तू राक्षसी भए मनुष्यक माँसक भक्षण कएल करऽ।" मुनिक शाप सुनि मुनिक अनुनय विनय कएल तथा मुनि हमर शापक अन्त अहाँ द्वारा केश पकड़ला सँ कहलेन्ह। अहाँ हमर शापक अन्त कएल। अतः अहाँ हमरा सँ वरदान माँगू।" श्रीदत्त कहलथिन्ह जे "हम अहाँ सँ दोसर वर कोन माँगब? जँ

अहाँ हमरा पर प्रसन्न छी तँ हमर मित्र निष्ठुरक केँ पुनर्जीवित कए दीश्रौन्ह।"
ओ श्री श्रीदत्त केँ वर दए अन्तर्धान भए गेलीह तथा निष्ठुरक सम अंग सँ व्याप्त भए पुनः जीव गेलाह।

प्रातःकाल ओ दुहू मित्र उज्जयिनी अएलाह जतए हुनक मित्र लोकनि बड़ आदर सँ हुनका लोकनि केँ रखलथिन्ह।

एहि तरहेँ आमोद-प्रमोद मे समय बितैत गेल। श्रीदत्त केँ हुनक मित्र लोकनि बड़ आदर करैत छलथिन्ह तथा श्रीदत्त सेहो ओतए अपनहि गृह सन आनन्दपूर्वक रहए लगलाह। एक समय वसन्तोत्सवक अवसर पर श्रीदत्त अपन मित्रक संग एक उद्यान मे मेला देखबाक हेतु गेलाह। ओतए राजा बिम्बिकिक कन्या मृगांगवती जनिक प्रस्फुटित तारुण्य साक्षात् वसंत-लक्ष्मी सन प्रतीत होइत छल तथा रूपक ज्योत्स्ना समग्र उद्यान केँ आलोकित करैत छल श्रीदत्तक कोमल हृदय मे तीरसन प्रवेश कए गेलीह जाहि सँ आहत सिंह सदृश ओ छटपटाए लगलाह।

एम्हर श्रीदत्तक तँ एहि तरहक हालत छल आ ओम्हर मृगांगवतीक सरल हृदय श्रीदत्तक रूप ओ गुण पर आकृष्ट भए पिजड़ा मे बंद पक्षीसन ओतए सँ अन्यत्र जेबा मे असमर्थ छल। मृगांगवती एहि झाड़ी सँ ओहि झाड़ीक मध्य घूमैत आँखि बचाए श्रीदत्त केँ देख लेल करथि जाहि सँ हुनका अतुल आनन्दक प्राप्ति होइन्ह।

एहि अनन्तर मृगांगवती केँ एक साप डसि लेलक। कोलाहल मचि गेल। कंचुकी कानए लगलीह। श्रीदत्त, बाहुशाली एवं हुनकर आन-आन मित्र सेहो ओतए गेलाह। लोक किंकर्त्तव्यविमूढ़ छल। एहि अभ्यन्तर श्रीदत्त अपन हाथक विषहरण केनिहारि औंठी राजकुमारिक आँगुर मे पहिराए देल। औंठीक प्रताप सँ विष नष्ट भए गेल तथा राजकुमारि पूर्ववत स्वस्थ्य भए गेलीह।

श्रीदत्तक एहि परोपकारक सभ प्रशंसा करए लगलैन्ह। राजा बिम्बिकि प्रसन्न भए श्रीदत्त केँ अपार धन देल जे ओ अपन मित्र लोकनि केँ दए देलथिन्ह।

राजकुमारिक गेलाक उपरान्त श्रीदत्त तँ गृह अएलाह मुदा हुनक मोन राजकुमारिएक संग चल गेल। ओ सतत शोकातुर रहैत छलाह। एक दिन राजकुमारिक प्रिय सखी भावनिका औंठी आपस करबाक अभिप्राय सँ श्रीदत्तक ओतए अएलीह तथा श्रीदत्त सँ कहल—"अहाँ हमर सखीक पाणिग्रहण कए ओकर स्वामी बनिश्रौक अन्यथा ओकर प्राण नहि बचतैक।"

भावनिकाक कथन सुनि श्रीदत्त केँ कतहु सँ प्राण पनपलैन्ह। ओ बाहुशाली एवं अन्य मित्र केँ बजौलथिन्ह तथा एहि प्रसंग मे गुप्त मंत्रणा कएलैन्ह। राजकुमारि केँ हरण कए मथुरा लए जेबाक विचार पर ओ लोकनि सहमति भए अपन मंतव्य भावनिका केँ कहि ओकरा अपन गृह पठौलैन्ह।

प्रातःकाल बाहुशाली अपन मित्रक संग व्यापारक हेतु मथुराक यात्रा

कएलैन्ह तथा श्रीदत्त एक पागलि कें राजकुमारिक निवास स्थान पर रहबाक हेतु पठौलथिन्ह। ओहि स्त्री कें भवन मध्य राखि भावनिका दीप जरेबाक अभिप्रायें ओहि भवन मे आगि लगाए देल तथा गुप्तरूप सँ राजकुमारि कें लए बाहर अएलीह।

बाहर प्रतीक्षा करैत श्रीदत्त अपन वृद्ध मित्रक संग राजकुमारि कें भावनिकाक संग लए बाहुशालिक ओतए मथुरा पठौलथिन्ह।

राजकुमारिक भवन मे आगि लगला सँ श्रीदत्त द्वारा पठाओल ओ पागलि स्त्री जरि गेलीह तथा लोक बुझलक जे भावनिकाक संग राजकुमारि सेहो जरि गेलीह।

राजकुमारिक गेलाक उपरान्त श्रीदत्त सेहो मृगांग खड्ग लए मथुरा कें प्रस्थान कएलाह। मार्ग मे श्रीदत्त कें अपशकुन भेलैन्ह। तत्पश्चात् भावनिकाक संग अपन मित्र कें आहत भेल देखलथिन्ह। ओ लोकनि श्रीदत्त कें देखि अत्यन्त कष्ट सँ कहलथिन्ह जे 'हमरा लोकनि कें आहत कए एवं राजकुमारि कें छीन किछु गोटए घोड़ा पर चढ़ल एहि मार्ग सँ गेलाह अछि। अतः विलम्ब नहि कए राजकुमारिक मुक्तिक उपाय करू।"

श्रीदत्त घोड़ा कें दौड़बैत आगाँ बढ़लाह। किछु दूर गेलाक उपरान्त ओ हुनका लोकनि कें देखलथिन्ह जनिका मध्य एक घोड़ा पर चढ़ल एक व्यक्तिक संग राजकुमारि सेहो छलीह। श्रीदत्त ओहि घोड़सवारक संग युद्ध कए सभ कें मारि राजकुमारि कें संग लए अपन मित्रक समीप विदाह भेलाह।

किछु दूर अएला पर श्रीदत्तक घोड़ा अत्यन्त क्लान्त भेला सन्ता खसि पड़ल तथा ओ ओतहि मरि गेल। मृगांगवती सेहो प्यास सँ व्याकुल भए गेलीह। श्रीदत्त मृगांगवती कें ओतए ठहराए जलक जिज्ञासा मे गेलाह।

जलक अन्वेषण करैत श्रीदत्त कें साँझ भए गेलैन्ह। ओ मार्ग बिसरि एमहर-ओमहर बौआए लगलाह तथा भरि राति मृगांगवतीक वियोगानिल मे तपैत रहलाह। भोर भेला पर ओ ओहि स्थान पर अएलाह जतए मरल घोड़ा तँ छल मुदा मृगांगवती नहि छलीह।

श्रीदत्त मृगांगवती कें नहि देखि अत्यन्त व्याकुल भए अपन प्रारब्ध पर विचारए लगलाह। ओ अपन मृगांग खड्ग कें एक वृक्षक नीचाँ मे राखि अपन प्रियाक जिज्ञासाक हेतु ओहि वृक्ष पर चढ़ि गेलाह। एहि अभ्यन्तर अकस्मात् एक जंगली भिल्लराज ओतए अएलाह। ओ वृक्ष लग राखल खड्ग कें उठाओल। श्रीदत्त भिल्लराज कें देखि वृक्ष सँ उतरि अपन प्रियाक विषय मे हुनका सँ पुछलथिन्ह। भिल्लराज हुनका एक गामक मार्ग देखाए कहलथिन्ह जे—"अहाँ ओहि गाम मे चलू। सम्भवतः अहाँक प्रिया ओतहि होएतीह। हमहुँ ओतए अबैत छी तथा अहाँक खड्ग सेहो ओतहि अनैत छी।"

श्रीदत्त भिल्लराज द्वारा देखाओल मार्गक अनुशरण करैत ओहि गाम मे गेलाह। ओ भिल्लराज सेहो ओतए अएलाह तथा श्रीदत्त कें स्वादिष्ट भोजन कराए, विश्रामक हेतु सुन्दर आसन दए एक गुप्त कोठरी मध्य बंद कए देल। ओहि कोठरी मे बंद भए श्रीदत्त मृगांगवतीक कोनो उद्देश्य नहि पाबि तथा अपन प्राण संकट मे जानि कानए लगलाह।

श्रीदत्तक विलाप सुनि मोचनिका नामक ओहि भिल्लराजक एक दासी श्रीदत्तक समक्ष आबि अत्यन्त द्रवीभूत भए बजलीह—"अहाँ दुर्भाग्यवश एहि स्थान मे आबि गेलहुँ अछि। भिल्लराज एहि समय कतहु बाहर गेल छथि। ओतए सँ आपस अएला पर ओ अहाँ कें भगवती चँडिकाक समक्ष बलि देताह। अतः जँ अहाँ कें अपन जान बचेबाक अभिष्ट होए तँ अहाँ भिल्लराजक पुत्री सुन्दरी कें अपन पत्नी बनबिऔक जे अहाँ पर आकृष्ट अछि। ओ अहाँक मुक्ति करौतीह।"

मोचनिकाक प्रस्ताव कें स्वीकार कए श्रीदत्त गन्धर्व विधि सँ रूपक निधि एवं विधिक उत्कृष्ट कृति ओहि भिल्लराजक कन्याक संग ब्याह कए ओकरा अपन पत्नी बनौलैन्ह। ओ परिपूर्ण सौन्दर्य सँ सम्पन्न एवं समस्त मधुरिमाक आगार सुन्दरीक स्नेहपाश मे तेहेन ने बन्हि गेलाह जे हुनका मृगांगवतीक सुधियो धरि नहि रहलैन्ह।

कालक्रमें सुन्दरी गर्भवती भए गेलीह तथा ओकर माए मोचनिकाक द्वारा अपन कन्याक प्रेम-प्रसंग कें बूझि अपन जमाएक समक्ष आबि स्नेहपूर्वक बजलीह "हे पुत्र! सुन्दरीक पिता श्रीचँड अत्यन्त क्रोधी छथि ओ कोनहु रूपें अहाँ कें नहि छोड़ताह। अतः अहाँ अपन जान बचेबाक उद्देश्य सँ एतए सँ चल जाउ मुदा सुन्दरी कें नहि बिसरबैक।" एहि तरहें कहि ओ श्रीदत्त कें ओतए सँ मुक्त कए बिदाह कएल।

श्रीदत्त किछु दूर चललाक उपरान्त पुनः ओहि स्थान पर अएलाह जतए हुनक घोड़ा मरिगेल तथा ओ मृगांगवती कें रखने छलथिन्ह। ओतए ओ एक व्याध कें देखलथिन्ह तथा ओहि व्याध सँ मृगांगवतीक विषय मे पुछलथिन्ह। व्याध अत्यन्त आश्चर्यक स्वर मे बजलाह "की अहाँ श्रीदत्त छी!" श्रीदत्त व्यथित स्वर मे उत्तर देलथिन्ह "हँ हमहीं ओ अभागल व्यक्ति छी।" एहि पर ओ व्याध पुनः बजलाह "हे मित्र अहाँक नाम लए विलाप करैत अहाँक स्त्री कें धैर्य दए हम अपन गाम तँ अनलियैन्ह मुदा हुनक रूप ओ लावण्य कें देखि किछु युवकक मनोवृत्ति सँ डरि हम हुनका मथुराक समीप नागस्थल नामक गाम मे लए गेलिऐन्ह। ओतए विश्वदत्त नामक ब्राह्मणक गृह मे हुनका धरोहर रूप मे राखि पुनः एतए अहाँक अन्वेषण मे आएल छी। आब हम अहाँ कें पाबि प्रसन्न भेलहुँ। अहाँ ओतए

जाए अपन प्रिया कें दर्शन दए हुनका कृतार्थ करिऔन्ह। ओ अहींक हेतु स्वतन्त्र नोर चुबबैत छथि।

व्याधक एहि तरहक वचन सुनि श्रीदत्त ओतए सँ प्रस्थान कएल तथा दोसर दिन ओ नागस्थल पहुँचि गेलाह। ओतए ओ विश्वदत्तक गृह जाए विश्वदत्त सँ मृगांगवतीक प्रसंग मे पुछलथिन्ह।

विश्वदत्त कहलथिन्ह जे "एहि ग्राम कें निर्जन बूझि तथा एतए हुनक समुचित रक्षाक प्रबन्ध नहि जानि हम हुनका अपन मथुराक एकगोट गुण-ग्राही मित्रक ओतए रखने छिऐन्ह जे राजा शुरसेनक मंत्री थिकाह। अतः अहाँ ओतए जाउ।"

श्रीदत्त प्रातः काल मथुरा कें बिदाह भेलाह तथा दोसर दिन अपराह्न मे ओ ओतए पहुँचलाह। रास्ताक थकावट कें मेटेबाक हेतु ओ एक निर्मल जल सँ भरल सरोवर मे प्रवेश कएलैन्ह।

ओहि सरोवर मे श्रीदत्त कें किछु बहुमूल्य वस्त्र भेटलैन्ह जे ओतए चोरक द्वारा नुकाए राखल गेल छल। ओहि मे सँ एक वस्त्रक छोड़ मे एक कीमती हार सेहो बाँधल छल जकरा श्रीदत्त नहि देखलथिन्ह।

श्रीदत्त एहि वस्तु कें लए मथुरा मे प्रवेश कएलाह। नगरमध्य आइत राजकर्मचारी ओहि वस्त्र एवं हार कें देखि श्रीदत्त कें पकड़ि लेल तथा सामानक संग नगराधिपतिक समक्ष उपस्थित कएल। नगराधिपति श्रीदत्त कें राजाक समक्ष पठौलथिन्ह तथा राजा हुनका चोरीक दोष लगाए फाँसीक सजा देलथिन्ह। अतएव राजकर्मचारी ढोल बजाए नगर मध्य होइत श्रीदत्त कें फाँसिक स्थान पर लए आइत छलाह। मृगांगवती राजाक मंत्रीक घरक जंगला पर बैसल एहि दृश्य कें देखि मंत्री सँ निवेदन कएल जे "हमर पति फाँसी पर लटकेबाक हेतु लए जाए रहल छथि।" मंत्री बधिक के आदेश दए श्रीदत्त कें राज दंड सँ मुक्त कराए अपन गृह अनलथिन्ह।

श्रीदत्त कें देखतहिं मंत्रीक हृदय मे सौहार्दक भावना उत्पन्न भए गेलैन्ह तथा ओ हुनका सँ परिचय पुछलथिन्ह। श्रीदत्तक माता-पिताक नाम सुनितहिं ओ श्रीदत्त कें छाती लगाए आनन्द विभोर भए कहलथिन्ह जे "अहाँ हमर भातीज थिकहुँ।" भाइक मृत्युक समाचार बूझि हुनका आँखि सँ नोरक धार फूटि परल तथा ओ श्रीदत्त कें धैर्य दए कहलथिन्ह "हे पुत्र! हमरा धनदा नामक यक्षिणी सिद्ध छथि। ओ हमरा पाँच सहस्र घोड़ा तथा सात करोड़ सोनाक मोहर देलैन्ह अछि। हम पुत्रहीन छी। अतः ई सभ धन तँ अहींक छी।" एहि तरहें कहि मंत्री सभ धन श्रीदत्त कें दए देल। श्रीदत्त सभ धन अपन पित्ती सँ लए ओतहि मृगांगवतीक संग ब्याह कए सुख सँ रहए लगलाह।

किछु कालक उपरान्त श्रीदत्तक पिती श्रीदत्त कें एकान्त मे बजाए कहलथिन्ह "हे पुत्र ! राजा शुरसेन कें एक कन्या छथिन्ह जे सर्वांगसुन्दरि छथि । राजा एहि कन्या कें लए श्रोकर कन्यादानक निमित्त श्रवन्ति देश जेबाक श्रादेश देलैन्ह श्रछि। हम मार्ग मे एहि कन्या कें हांर श्रहाँ कें देबाक चाहैत छी । अतः श्रहूँ श्रवन्ति देश कें प्रस्थान करू ।"

एहि तरहें निश्चय कए विगतभय एवं श्रीदत्त राजाक सेना एवं दहेजक सामग्रीक संग श्रोहि कन्या कें लए श्रवन्तिक हेतु प्रस्थान कएलाह ।

किछु कालक उपरान्त जखन श्रो लोकनि विन्ध्य पर्वतक जंगल मध्य प्रविष्ट भेलाह कि डाकूक एक पैघ दल हुनका लोकनि कें मार्ग रोकि समस्त सेना कें मारि श्रीदत्त, मंत्री एवं राजकुमारि कें बाँधि समस्त धनक संग श्रपन नगर मे लए श्राएल तथा हुनका लोकनि कें चँडिकाक एक भीषण मंदिर मे पहुँचाश्रोल जतए घंटा श्रपन भवनि सँ हुनका लोकनिक मृत्युक श्राह्वान पूर्वहिं सँ करैत छल ।

श्रीदत्त एवं श्रान बंदी लोकनि कें देखबाक हेतु श्रपार भीड़ एकत्रित भए गेल । भिल्लराजक पुत्री सुन्दरी सेहो श्रपन नेना कें कोर मे लए श्रोतए पहुँचलीह जे श्रपन पिताक मृत्युक उपरान्त श्रोहि भिल्लपुरीक शासन करैत छलीह ।

श्रीदत्त कें देखितहिं सुन्दरी श्रानन्द मे विभोर भए श्रोतए सँ हुनका लोकनि कें श्रपन एह श्रानलथिन्ह तथा स्वागत कए श्रोहि भिल्लपुरीक राज्य तथा हुनक मृगांग खड्ग जे हुनक पिता लेने रहथिन्ह दए देलथिन्ह ।

श्रीदत्त श्रोतहि श्रोहि शुरसेनक कन्या सँ व्याह। कएल तथा श्रोहि नगरक महान राजा बनि गेलाह ।

किछु दिनक उपरान्त श्रीदत्त श्रपन पितिक विचार सँ राजा बिम्बिकि एवं राजा शुरसेनक श्रोतए दूत पठौलथिन्ह । श्रपन कन्याक स्नेहवश श्रो दुहू राजा श्रपन सेनाक संग विवाह-संबंधक हेतु श्रोतए श्रएलाह । श्रीदत्त हुनका लोकनिक स्वागत-सत्कार कएलथिन्ह । तत्पश्चात् श्रीदत्त श्रपन श्वसुरक सेना लए श्रपन पिताक हत्यारा पाटलिपुत्रक राजा विक्रमशक्तिक संग युद्ध कए श्रोकरा मारि श्रपन बदला लेलैन्ह तथा पाटलिपुत्रक राज्य सेहो प्राप्त कएलैन्ह । एहि तरहें श्रीदत्त मृगांगवतीक संग श्रासमुद्र पृथ्वीक राज्य प्राप्त कए श्रानन्दपूर्वक रहए लगलाह ।

●

अप्रमादी व्यक्ति

वाराणसी मे एक ब्राह्मण छलाह। ओ खेती कए अपन गुजर करैत छलाह। हुनक परिवार मे स्त्री, पुत्री, पुत्र-वधु तथा एक खवासिनी रहैन्ह। ब्राह्मण सतत् अपन परिवारक लोक कें कहल करथि जे "उपलब्ध भेल धनक दान, शीलक रक्षा, उपोसथ-व्रत एवं मरण-स्मृतिक भावना करू। प्राणीमात्रक मरब निश्चित, जीवन अनिश्चित, संस्कार अनित्य तथा क्षय-व्यय स्वभाविक होइत अछि।"

एक दिन ब्राह्मण कृषि-कर्मक हेतु अपन पुत्रक संग गेलाह। एक साप ब्राह्मण कुमार कें डसि लेलक जाहि सँ ओ तत्क्षण मरि गेलाह। ब्राह्मण पुत्र कें मरल आनि नहि कनलाह। ओ मृतक कें उठाए एक वृक्षक समीप राखि वस्त्र सँ झाँपि देल तथा अनित्यताक विचार मे लीन भए विचारए लगलाह "टूटएवाला टूटैछ एवं मरए वाला मरैछ। अतः सब संस्कार अनित्य थिक"। एहि तरहेँ सोचि पुनः अपन कार्य मे लीन भए गेलाह।

खेतक समीप सँ जाइत एक गोट व्यक्ति कें देखि ओ ब्राह्मण कहलथिन्ह "अहाँ घर जाइत छी? त जाए तँ ब्राह्मणी सँ कहबैन्ह जे पूर्व जेकाँ आइ दुइ गोटेक भोजन नहि आनि एकहि गोटेक भोजन ओ अनतीह"।

ओ व्यक्ति ब्राह्मणक कथनानुसार ब्राह्मणी सँ कहलथिन्ह। ओ बूझि गेलीह जे हुनक पुत्रक मृत्यु भए गेलैन्ह। मुदा हुनका कम्पन मात्रहुँ नहि भेल। ओ ब्राह्मणी स्वच्छ वस्त्र पहिर हाथ मे सुगन्धित फूल लए पुत्र-वधू, पुत्री तथा खवासिनीक संग ओहिठाम पहुँचलीह। हुनका लोकनि मे सँ ने तँ किओ कनलीह आने बजलीह। ब्राह्मण जतए पुत्रक मृतक शरीर पड़ल छल ओतहि खेलैन्ह। भोजनक उपरान्त सभ मिलि लकड़ी आनि चिता सजाए मृतकक संस्कार कएलथिन्ह। ककरहुँ आँखि मे ने तँ नोर छल आने कोनो विषाद। एहि दृश्य सँ इन्द्रक आसन डोलि गेल तथा इन्द्रभगवान संस्कार स्थान पर आबि एक दिसि ठाढ़ भए पुछलथिन्ह "आहाँ लोकनि की कए रहल छी?" ब्राह्मण बजलाह जे "एक मृतक कें जराए रहल छी।" इन्द्रभगवान पुछलथिन्ह "ओ की शत्रु छलाह?" ब्राह्मण बजलाह "नहि ओ प्रिय पुत्र छलाह।" इन्द्रभगवान पुछलथिन्ह "तँ अहाँ कनैत किएक नहि छी?" ब्राह्मण कहलथिन्ह "मनुष्य अपन शरीर कें छोड़ि एहि प्रकारे जाइत अछि जाहि तरहेँ साप अपन केचुआ कें छोड़ैत अछि। भोगहीन शरीरक अन्त भेला पर जँ ओ जराओल जाइछ तँ सम्बन्धीक कननाइ कें ओ नहि जनैत अछि। अतः हम ओकर सोच नहि करैत छी। ओकर जे गति छलैक ततए गेल।"

इन्द्र ब्राह्मणक उत्तर सुनि ब्राह्मणी सँ पूछल "ओ अहाँक के छलाह ?" ब्राह्मणी बजलीह "दस मास कोखि मे राखि स्तन पान कराओल एवं हाथ पाएर ठीक कए पालल पोसल पुत्र ।" इन्द्र कहलथिन्ह जे "पिता पुरुष भेला सँ भने नहि कानए मुदा माताक हृदय तँ कोमल होइछ । अतः अहाँ किएक; नहि कनैत छी ?" ब्राह्मणी बजलीह जे "बिनु बजौने आएल छल तथा बिनु आज्ञाक गेल तखन कानब-खोजब कथिक !" तखन इन्द्र मृतकक बहिन सँ पुछलथिन्ह जे "अहाँक ओ के छलाह ? बहिन कहलथिन्ह "ओ हमर भ्राता छलाह ।" एहि पर इन्द्र पुछलथिन्ह "बहिन कें तँ भाई सँ स्नेह होइत छैक तखन अहाँ किएक नहि कनैत छी ।" बहिन कहलथिन्ह "कनला सँ कृप भए जाएब जाहि सँ हमरा कोन लाभ भए सकैछ ? कृप भेला सँ भविष्यक मित्र तथा सुहृदयजन कें अरुचि भए जेतैन्ह । तखन कनबा-खीजबाक प्रयोजने की !"

इन्द्र बहिनिक पश्चात् मृतकक स्त्री सँ पूछल "अहाँक ओ कें छलाह ? स्त्री बजलीह "ओ हमर पति छलाह ।" इन्द्र कहल "पतिक मृत्यु पर स्त्री तँ विधवा भए जाइछ । अतः अहाँ किएक नहि कनैत छी ?" स्त्री कहल "आइस चन्द्रमा कें लेबाक हेतु नेनाक कानब सन मृतकक हेतु ओकर सम्बन्धीक कानब थिक । तखन कानबाक कोन अर्थ भए सकैछ ?"

इन्द्र तखन खवासिनी सँ पूछल "अहाँक ओ के छलाह ?" खवासिनी बजलीह "ओ हमर मालिकक पुत्र छलाह ।" इन्द्र कहलथिन्ह "अवश्य ओ अहाँ कें सताए विशेष कार्य करबैत छलाह । अतएव अहाँ सोचैत छी जे ओ भने मरि गेलाह । अतः कनैत नहि छी ।" खवासिनी कहल "क्षमा करू ! ई हुनक योग्य नहि छल । क्षमा, मैत्री तथा दया सँ युक्त हमर आर्यपुत्र हृदय सँ पोसल पुत्र सन छलाह ।" इन्द्र कहल "तखन अहाँ कनैत किएक नहि छी ?" ओ बजलीह "फूटल पानिक घैल जे पुनः जोड़ल नहि जाए सकैछ तथा जहिना ओहि हेतु कानब व्यर्थ थिक ताहि सदृश ओकर आचरण होइछ जे मृतकक हेतु कनैछ" ।

इन्द्रभगवान सभहक धर्म-कथा सुनि प्रसन्न भए कहल "अहाँ लोकनि अप्रमादी भए मरणानुस्मृतिक अभ्यास कएल अछि । अतः अहाँक गृह अनन्त धन सम्पत्ति भए जाएत तथा अहाँ लोकनि एहि असार संसार मे सुख भोगि मोक्ष प्राप्त करब ।"

आशाक फल

एक पुण्यात्मा पुण्य क्षीण भेला सन्ता स्वर्ग सँ च्युत भए पृथ्वी पर एक सरोवरक कमल मध्य एक कन्याक रूप मे उत्पन्न भेलाह। आनआन कमल तँ समयानुसार झड़ि गेल मुदा ओ कमल जाहि मध्य स्वर्ग सँ उतरल ओ पुण्यात्मा कन्याक रूप ने छलाह सरोवर मध्य फुलाएले रहल।

सरोवर मे स्नान केनिहार लोकनि कैँ यद्यपि एहि कमल कैँ देखि आश्चर्य होइत छलैक मुदा किओ एहि दिशि अपन ध्यान नहि देलक। अन्त मे एक मुनि एक दिन स्नान करैत एहि कमल कैँ तोड़बाक हेतु गेलाह तथा एहि मध्य एक अपूर्व सुन्दरि कन्या कैँ देखि ओकरा पुत्री बूझि अपन पर्णकुटी मे आनि ओकर लालन-पालन करए लगलाह। मुनि ओहि कन्याक नाम आशंका कुमारि रखलथिन्ह।

आशंका समय पाबि पूर्ण युवती मे परिणत भए गेलीह जनिक रूप ओ गुणक चर्चा राजा धरि पहुँचि गेल। राजा चतुरङ्गिणी सेना तथा आमात्यक संग मुनिक आश्रम आबि मुनि सँ अनुनय कएल जे "युवती ब्रह्मचर्यक हेतु मलस्वरूप होइछ। अतः अपनेक पुत्रीक पालन-पोषण आब हम करए चाहैत छी"।

मुनि राजाक विनययुक्त कथा कैँ सुनि प्रत्युत्तर दैत बजलाह जे "जँ अहाँ एहि कन्याक नाम बिनु कहने कहि सकी तँ एहि कन्या कैँ लए जाए सकैत छी"। राजा मुनिक वचन कैँ स्वीकार कए, अपन मन्त्री सँ विचारि अनेको नाम मुनि सँ कहल मुदा मुनि एहि नाम सँ सहमत नहि भेलाह।

एहि तरहेँ नामक विचार करैत राजा कैँ एक वर्ष बीत गेल। राजाक अनेको नोकर-चाकर बाघ, सिंह आदि जंगली जानवर सँ मारल गेल तथा राजा स्वयं शीतज्वर सँ पीड़ित भए गेलाह। अतः राजा कैँ क्रोध भेल तथा मुनि सँ कहि ओहि ठाम सँ ओ प्रस्थान करए लगलाह। एहि अनन्तर आशंका अपन घरक खिड़की लग ठाढ़ छलीह। राजा ओकरा देखि बजलाह "हम अहाँक नाम नहि जानि सकलहुँ। अतः आब एतए सँ जाए रहल छी।"

राजाक वचन सुनि आशंका राजा सँ एवंकमें बजलीह—"देवलोकक चित्र-लतावन मे आशावती नामक लता एक हजार वर्ष मे एक बेर फरैत अछि। एहि लताक फल सँ दिव्य रस बनैछ। एहि रस कैँ एक बेर पीला सँ चारि मास धरि पुनः निन्द नहि टूटैछ। एहि फलक प्रेमी देवपुत्र हजार वर्ष धरि एहि लताक सेवा करैत अछि मुदा अहाँ तँ एके वर्ष मे उद्विग्न भए गेलहुँ।"

आशंकाक एहि तरहक कथन कें सुनि राजा पुनः अनेक नामक कल्पना कएल मुदा मुनि पूर्ववते एहि मे सँ कोनो नाम कें नहि मानल। अतः राजा फेर उद्विग्न भए ओहिठाम सँ चलबाक उपक्रम कएलैन्ह।

राजा कें जाइत देखि आशंका पुनः राजा सें बजलीह—"एक बगुला एक सरोवर सँ शिकार पकड़ि एक पर्वत पर जाए बैसल। ओ ओहि दिन ओतए रहल तथा दोसर दिन विचारलक जे 'हम एहि पर्वत शिखर पर अत्यन्त सुख सँ छी। एतए सँ नहि उतरि एहिठाम शिकार ग्रहण कए सकी तँ कतेक नीक होएत।" ओहि दिन देवराज इन्द्र असुर पर विजय प्राप्त कए विचारलैन्ह जे 'हमर मनोरथ तँ पूर्ण भेल मुदा किओ एहेन अछि जकर मनोरथ पूर्ण नहि भेल हो? ध्यान लगेला पर इन्द्र भगवान ओहि बगुला कें देखि विचारलैन्ह जे ओकर मनोरथ पूर्ण करबाक चाही। अतः बगुलाक समीपक नदी मे बाढ़ि आनि ओतहि पर्वत शिखर तक पहुँचा देल। बगुला ओतहि बैसि इच्छापूर्वक माँछ खाए तथा पानि पीबि प्रसन्न भेल। एहि तरहेँ जखन बगुलोक आशा पूर्ण भेलैक तखन अहाँक आशा किएक नहि पूर्ण होएत?"

राजा ओकर बात मानि पुनः अनेको नाम कें मुनि सँ कहलथिन्ह तथा और एक वर्ष भरि रहलाह। मुदा मुनिक असहमति पर पुनः ओतए सँ चलबाक उपक्रम कएलैन्ह। राजा कें जाइत देखि आशंका पुनः खिड़कीक समीप ऐलीह। राजा ओकरा देखि बजलाह जे, "आब अहाँ एतहि रहू हम जाए रहल छी।" आशंका बजलीह जे "अहाँ किएक जाइत छी?" राजा कहल जे 'अहाँ बचनमात्र सँ हमरा संतुष्ट करए चाहैत छी क्रिया सँ नहि। पलाशक फूल देखबा मे तँ सुन्नर मुदा सुगंधहीन होइत छैक। निष्फल मधुर वाणी बजनिहारक प्रीति स्थाई नहि होइछ। अतः हम अधिक काल भरि नहि रहि सकैत छी कारण हमरा आन जेबाक आशंका प्रतीत भए रहल अछि। आशंका राजाक बात सुनि अति प्रसन्न भए बजलीह—"महाराज! आब अहाँ हमर नाम जनैत छी। आशंका हमर नाम थिक।"

ई सुनि राजा मुनि सँ आशंकाक नाम कहि आशंका कें अपन गृह आनि सुखपूर्वक रहए लगलाह।

निष्कृति दान

इक्ष्वाकु वंश मे हरिश्चन्द्र नामक एक प्रतापी राजा भेलाह जनिक सत्य-व्रतक महत्ता सर्वव्यापी भए गेल अछि।

राजा हरिश्चन्द्रक राज्य मे राज्यलक्ष्मी, जयलक्ष्मी, धनलक्ष्मी आदि सभ समृद्धि सँ छलाह मुदा राज्यक उत्तराधिकारीक अभाव छल। अतः राजा सतत् खिन्न रहैत छलाह। पुत्र प्राप्तिक हेतु यद्यपि राजा कतिपय यज्ञ कैलन्हि मुदा सभ दिसि सँ हुनका निराशे भेटलैन्ह। अन्त मे ओ वरुण भगवानक शरण जाए हुनक आराधना कए अनुनय कएल जे "हे भगवन्! देवऋण कें तँ हम यज्ञ सँ तथा ऋषि-ऋण कें अध्ययन सँ पूर्ण कएल मुदा पितृऋणक अपूर्त्तिक दोष सँ हमर चिन्ता सतत् बढ़ैत अछि। अहाँ हमरा पुत्र दए हमर दुखक अन्त करू तथा ओहि पुत्र कें हम अहाँ कें बलिदान दए देब।

राजाक प्रार्थना कें वरुणदेव स्वीकार कएलथिन्ह तथा समय पाबि राजा कें अत्यन्त सुन्दर पुत्र उत्पन्न भेलैन्ह। राजा प्रसन्न भेलाह तथा याचक ओ ब्राह्मण लोकनि कें अतुल धन दानक रूप मे देलथिन्ह। एहि अनन्तर वरुणदेव सेहो प्रकट भेलाह तथा राजा कें अपन प्रतिज्ञाक स्मरण करौलथिन्ह।

राजा वरुणदेवक प्रार्थना कएल जे "एखन तँ बालक प्रसूति गृह मे अछि। एहि गृह सँ बहराइतहिँ हम अपने कें सौंपि देब।"

राजाक कथन मानि वरुणदेव चल गेलाह। एहि तरहेँ क्रमशः बारह दिन बीत गेल। बालक शुद्ध भए प्रसूति गृह सँ बाहर भेलाह। वरुणदेव पुनः राजाक ओतए आबि राजा सँ पुत्रक याचना कएलैन्ह।

वरुणक कथा सुनि राजाक हृदय काँपि उठल। मुदा ओ कए की सकैत छलाह? राजा स्नेहातुर भए बजलाह—"प्रभु! अखन तँ एहि बालक कें दूधक दाँतो नहि अएलैक अछि। अँ दूधक दाँत औतैक तँ अपने एहि बालक कें ग्रहण करब। वरुण राजाक कथा मानि पुनः चल गेलाह।

राजाक स्नेह पुत्रक प्रति बढ़ैत गेल तथा ओ बरोबरि वरुणदेव कें ठकि ओतए सँ आपस कए दैत छलाह।

एहि तरहेँ समय बितैत गेल। बालकक नामकरण, उपनयन आदि सभ संस्कार सम्पन्न भेल। बालकक नाम रोहित राखल गेल।

रोहित वैध भेलाह। राजा अपन प्रस्ताव केँ पुत्रक समक्ष राखल जे ओ वरुणदेव सँ प्रतिज्ञा कएने छलाह।

पिताक वचन रोहित केँ बड़ बेजाए लगलैन्ह। ओ भोर होइतहिँ राज-भवन ओ राज्य-सुख केँ छोड़ि जंगलक रास्ता लेलैन्ह।

वरुणदेव पुनः हरिश्चन्द्रक गृह आबि बालकक याचना कएल मुदा राजाक कथन जे रोहित भागि गेलाह सुनि ओ क्रोधित भए राजा केँ दण्ड देबाक निश्चय कएलैन्ह।

हरिश्चन्द्र पर विपत्तिक पहाड़ टूटि पड़ल। जलक अधिपति-वरुण राजाक शरीर मे जलक वृद्धि कएल। राजा केँ जलोदरक रोग भए गेलैन्ह। राजाक शरीर पीयर भए गेल तथा पेट फूलि गेलैन्ह। राजा रोग-ग्रस्त भए शय्याक शरण लेल। मंत्री लोकनि यद्यपि राजाक रोगक मुक्तिक अथक प्रयास कएलैन्ह मुदा हुनक रोग दिनानुदिन बढ़ितहिँ गेलैन्ह।

एक दिन हरिश्चन्द्रक रोगक समाचार कोनहु तरहेँ रोहितो केँ ज्ञात भेलैन्ह। पिताक दुख सँ दुखी भए ओ गृह केँ प्रस्थान कएल।

रोहितक विवेक केँ जानि इन्द्र भगवान केँ बड़ आश्चर्य भेलैन्ह। ओ एक ब्राह्मणक रूप मे आबि रोहित सँ पुछलथिन्ह ''जे अहाँ कतए जाए रहल छी! रोहित प्रत्युत्तर दैत कहलाह "हमर पिता वरुणदेव केँ हमरा बलि देबाक प्रतिज्ञा कएने छथि। हम वरुणदेवक निमित्त बलिक हेतु जाए रहल छी।"

रोहितक कथन सुनि इन्द्र सद्भावना प्रकट करैत कहलाह—''अहाँ केहेन मूर्ख छी जे निश्चेष्ट भए पशुसन कार्य करए जाए रहल छी! निष्क्रिय व्यक्तिक किओ सहायता करैत अछि? क्रियाहीन व्यक्ति केँ लक्ष्मी नहि वरण करैछ तथा एहि तरहक व्यक्ति सतत् तुच्छ बूझल जाइछ।

इन्द्रक कथा रोहित केँ यद्यपि पसन्द भेलैन्ह तथा ओ जंगल केँ वापस चल गेलाह मुदा हुनक विवेक बुद्धि प्रायः जागि उठैत छल तथा ओ पिताक दुखक कल्पना कए पुनः अपन गृह चलबाक उपक्रम करए लगैत छलाह जे इन्द्रक तर्कक प्रहार सँ सतत् हत भए जाइत छल।

प्रायः देखल जाइछ जे विवेक बुद्धि केँ प्रेरित करैछ। रोहित पिताक व्यथाक कल्पना कए काँपि उठलाह। ओ अपन गृहक मार्गक अनुसरण कएलैन्ह। इन्द्र पुनः टोकलथिन्ह। मुदा ज्ञान-दीप केँ जरितहिँ मोहक अंधकार नष्ट भए जाइछ।

मार्ग मे आइत रोहित कें एक उपाय सूझल। ओ विचारए लगलाह जे "हमर बदला मे जँ कोनो आन व्यक्तिक बलि वरुण कें दए देल जाए तँ कतेक नीक होएतैक। एहि प्रकारक निष्कृति दानक तँ व्यवस्थो छैक। रोहित एहि तरहेँ विचारैत जाइतहिँ छलाह कि रास्ता मे एक ब्राह्मणक कुटी भेटलैन्ह। ओ ब्राह्मण पाँच प्राणी छलाह—पिता, माता, तथा तीन पुत्र। पिताक नाम छल अजीगर्त सौयवसी एवं पुत्रक नाम छल शुनःपुच्छ, शुनःशेष तथा शुनोलाङ्गूल। पाँचो व्यक्ति भूख सँ तड़पैत छलाह। ओ लोकनि स्वतः अपना कें बेचि उदर पूर्त्तिक प्रसंग मे परस्पर वार्त्ता करैत छलाह। रोहित हुनका लोकनिक अभिप्राय बूझि प्रसन्न भेलाह तथा समीप जाए कहल "हमरा एक व्यक्तिकें अपन प्रतिनिधि बनाए वरुण कें बलि देबाक अछि। एहि बदला मे हम १०० गाय देब। जँ अहाँ लोकनि कें स्वीकृति हो तँ किओ हमरा संग चलू।

रोहितक कथा कें जखन ओ लोकनि स्वीकार कएल तँ ओ सभ सँ पैघ पुत्र कें चलबाक हेतु कहलथिन्ह। एहि पर पिताक कथन भेल जे "ई हमर पिण्डदानक अधिकारी थिकाह। अतः हिनका हम नहि दए सकैत छी। रोहित तखन छोट पुत्र सँ चलबाक हेतु कहलथिन्ह। रोहितक कथन सुनि माता बजलीह जे "ई हमर छोट पुत्र थिकाह जे परम प्रिय छथि। हम हिनका नहि दए सकैत छी।" अतः रोहित माझिल पुत्र कें संग लए चललाह।

रोहितक घर आपस आएब बूझि राजा हरिश्चन्द्र आनन्द मे विभोर भए गेलाह तथा वरुण सेहो निष्कृतिक प्रसंग के सहर्ष स्वीकार कएलथिन्ह।

राजसूयक व्यवस्था कएल गेल। विश्वामित्र, जमदग्नि आदि कतिपय मुनि लोकनि अएलाह तथा यज्ञ-क्रिया प्रारम्भ भेल। शुनःशेप के यूप मे बाँधबाक समय आएल। जमदग्निक कोमल हृदय बालक कें युप मे बाँधबा सँ अस्वीकार कएलक। हल-चल मचि गेल। वशिष्ठ एहि दुष्कर कार्यक हेतु शुनःशेषक पिता अजीगर्तहिँ कें कहल। १०० गाय लए ओ अपन पुत्र कें आलम्भन-यूप मे बाँधि देल। समग्र दर्शक पिताक कुकृत्य सँ लज्जित छल।

आलम्भनक समय आएल। किओ ब्राह्मण एहि बालक कें बलि देबाक हेतु तत्पर नहि भेलाह। पुनः बालकक पिता सँ पूछल गेल। ओ १०० गाय लए पुनः प्रस्तुत भए गेलाह।

पिताक एहि जघन्य कृति पर विश्वामित्र कें अत्यन्त क्षोभ भेलैन्ह। ओ प्रतिवाद करैत एहि कार्यक निन्दा कएलथिन्ह। मुदा किओ व्यक्ति हुनका समर्थन

नहि कएलकैन्ह । शुनःशेप अपन जीवनक अंतिम समय जानि तथा संसारक प्रति निराश भए वरुण देवक स्तुति करए लगलाह । शुनःशेपक प्रार्थना सँ वरुण प्रसन्न भए गेलाह तथा ओ ओतए स्वतः प्रकट भए हुनक बंधन काटि राजा हरिश्चन्द्र केँ रोग सँ मुक्त कए देल । सभ एहि दृश्य केँ देखि अवाक छलाह तथा राजा सभ केँ दान-मान सँ सन्तुष्ट कएल ।

शुनःशेप पिताक कठोर कृत्य सँ दुखी छलाह तथा विश्वामित्र केँ अपन पिता बनौलैन्ह । विश्वामित्र शुनःशेप केँ अपन पोष्य-पुत्र बनाओल तथा विधिवत् सभ शास्त्रक अध्ययन कराए एक महान तत्त्वदर्शी बनाए देल ।

विचित्र वैद्य

पाटलिपुत्र नगर मे धनपालित नामक एक बनियाँ रहैत छलाह। एहि बनियाँ कें कीर्त्तिसेना नामक एक अत्यन्त रूपवती कन्या छलथिन्ह। धनपालित देवसेन नामक एक बनियाँ सँ कीर्त्तिसेनाक ब्याह कए देल। देवसेनक माए बड़ दुर्जन छलीह। ओ पतिक मृत्युक उपरान्त अपन गृहस्वामिनी भेलीह। ओ अनायासहिँ कीर्त्तिसेना सँ जरि पतिक परोक्ष मे ओकरा नाना प्रकारक कष्ट दैत रहैत छलीह। कीर्त्तिसेना कुलवधू जकाँ सासुक देल सभ दुःख कें सहि अपन पतियहुँ धरि कें अपना विषय मे किछु नहि कहैत छलीह।

एक समय देवसेन व्यापारक हेतु वलभी नगर कें प्रस्थान करैत छलाह। एहि अवसर पर कीर्त्तिसेना अपन पति सँ अनुनय करैत बजलीह—"एतेक दिन धरि तँ हम सासुक सतेबाक प्रसंग मे किछु नहि कहल मुदा जखन अहाँक अछैत हमर एहि तरहक दुर्दशा होइत अछि तँ अहाँक परोक्ष मे हमर केहेन हाल होएत।" कीर्त्तिसेनाक वचन यद्यपि देवसेन कें अत्यन्त मर्माहत कएलकैन्ह तथापि ओ मातृस्नेहवशात् अप्रिय कथा नहि बाजि मात्र अपन माए सँ कहलथिन्ह—"अहाँ कीर्त्तिसेनाक प्रति कोनो दुर्व्यवहार नहि करिऔक।"

देवसेनक वचन सुनि हुनक माए अत्यन्त क्रोध मे बजलीह— "हम कीर्त्ति-सेना कें की करैत छिऐन्ह जे सतत् ओ हमरा विरुद्ध मे अहाँ सँ कहैत रहैत छथि?" माएक उत्तर सुनि देवसेन गुम्म भए चल गेलाह तथा वलभी नगरक यात्रा कएलैन्ह।

देवसेनक गेलाक उपरान्त एक तँ कीर्त्तिसेना स्वतः पतिक वियोग मे खिन्न भए गेल छलीह आ दोसर सासुक देल कष्ट सँ जर्जरित ओ ज्वरग्रस्त भए रोग-शय्या पर पड़ल कहाहए लगलीह। एहि हालत मे एक दिन कीर्त्तिसेनाक सासु एक दासीक द्वारा कीर्त्तिसेना कें एक अनहार कोठली मे बजाए बाहर सँ एक दृढ़ अर्गला सँ बन्द कए देल तथा प्रतिदिन सन्ध्या कें एक माटिक पात्र मे आधा पात्र भात ओकरा भोजनक हेतु देल करथि। एहि तरहेँ कीर्त्तिसेना सासुक द्वारा सताएल जाइत सोचए लगलीह जे "हमर पति धनिक छथि, हम नीक कुल मे उत्पन्न लेल तथा आचरणो पवित्रे राखल तखन एहि तरहक विपत्ति भोगए पड़ैत अछि। एहि सभ कारणे लोक कन्याक जन्मक निन्दा करैत अछि किएक तँ कन्या-जीवन सासु, ननदि तथा विश्वापनक दोष सँ दुषित भए जाइछ।" एहि तरहेँ सोचैत कीर्त्तिसेना

कें ओहि अन्हार कोठली मे एक मोट सुरंगी भेटलैन्ह। ओहि सुरंगी सँ ओ एक सुरंग खुनलैन्ह जे ओहि स्थान सँ लए ओकर रहवाक भवन धरि छलैक। तदन्तर ओहि सुरंग-पथ सँ ओ अपन कोठली मे प्रवेश कए अपन वस्त्र ओ आभूषण लए निशान्त मे गुप्तरूपेँ बाहर भए प्रस्थान कएलीह।

एहि परिस्थिति मे कीर्त्तिसेना विचारए लगलीह जे "पिताक गृह जाएब अनुचित होएत अतः पतिक समीपे जाएब उचित होएत, कारण पतिव्रताक हेतु एहि लोक एवं परलोक दुहू मे पतियहिँ गति होइछ।" एहि तरहेँ सोचि ओ एक पोखरि मे स्नान कए पूर्ण रूप सँ एक राजपुत्रक भेष बनाए बाजार मे सोनाक आभूषण बेचि समुद्रसेन नामक एक बनियाँक संग वलभी नगर कें प्रस्थान कएलीह। समुद्रसेनहु राजकुमारक भेष धारण कएल कीर्त्तिसेना कें एक कुलीन ओ भद्र राजपुत्र जानि मार्ग मे यथोचित आदर-सत्कार कएलथिन्ह।

व्यापारीक ओ दल जाहि मे कीर्त्तिसेना आए रहल छलीह चुंगी कर सँ बचबाक हेतु उचित मार्ग कें छोड़ि जंगलक मार्गक अनुसरण कएल। किछु दिनक पश्चात् व्यापारीक दल घोर जंगलक एक कात मे ठहरल। ओहि समय एक गीदड़नी भयंकर रूपेँ कानब प्रारम्भ कएलक। एहि अपशकुन कें अशुभ बूझि व्यापारी लोकनि चोर-डाकूक आक्रमणक शंका सँ सावधान भेल तथा ओहि मध्य पुरुष भेष धारिणी कीर्त्तिसेना सोचए लगलीह—"लोकक पाप-कर्मक फल ओकर संतान कें भोगए पड़ैछ। जँ हम चोर-डाकू सँ मारल गेलहुँ तँ सासु कहतीह जे ओ ककरहुँ पर आशक भए घर सँ पड़ाए गेलीह तथा जँ वस्त्रक हरण भेल तँ स्त्रीत्वक भान भेला सँ सतीत्वक अपहरण होएत जाहि सँ मृत्यु श्रेष्ठ होइछ।" एहि तरहेँ निश्चय कए आश्रयक हेतु स्थान कें तकैत ओ एक वृक्षक धोधरि देखल-थिन्ह। ओहि धोधरि मे पैसि तथा ऊपर सँ घास-पात सँ अपन शरीर कें झाँपि ओ नुकाए रहलीह।

दुपहरिया रातिक समय डाकूक दल व्यापारीक दल कें घेरि, व्यापारी कें मारि सभ धन लूटि लए गेल। प्रातःकाल ओहि धोधरि सँ बाहर भए भूख ओ प्यास सँ व्यथित कीर्त्तिसेना एक तपस्वी कें देखल। तपस्वी ओकर सभ वृत्तान्त बूझि खेबाक हेतु फल एवं पीबाक हेतु कमण्डल सँ पानि दए आगाँ जेबाक मार्ग देखाए अन्तर्धान भए गेलाह।

थोड़ेक दूर आगाँ गेला पर सूर्य भगवान अस्ताचल कें गेलाह तथा कीर्त्ति-सेना एक विशाल जंगली वृक्षक धोधरि मे पूर्ववत् पैसि गेलीह तथा दोसर लकड़ी सँ धोधरिक दरबाजा बन्द कए देल।

राति भेला पर एक भीषण राक्षसी अपन छोट-छोट नेना सभहक संग आएल तथा ओहि वृक्ष पर चढ़ि गेल। ओकर नेनो सभ ओहि वृक्ष पर चढ़ल

तथा ओ अपन माए सँ स्वएबाक लेल भोजन मांगलक। क्षुधा सँ आतुर नैनाक कातर वचन केँ सुनि राक्षसी अत्यन्त व्यथित भए बजलीह—"हे पुत्र ! भोजनक जिज्ञासा मे हम अनेको स्थान गेलहुँ मुदा कतहु कोनो युक्ति नहि भए सकल। अन्त मे हम महाश्मशान गेलहुँ मुदा ओतहु आइ किछु नहि भेटल। डाकिनी सेहो नहि किछु देलक तखन भैरव सँ याचना कएल। भैरव नाम, गोत्र आदि पुछला पर आज्ञा देलैन्ह जे हमरा लोकनि वसुदत्तपुर केँ जाए। ओतए वसुदत्त नामक महाधार्मिक राजा छथि। एक बेर शिकार खेलेबाक हेतु ओ एक जंगल मे गेलाह तथा ओतए ओ सुति रहलाह। ओहि समय राजाक कान मे एक गोजर पैसि गेलैन्ह। किछु दिनक पश्चात् ओ राजाक माँथ मे प्रवेश कए गेलैन्ह जाहि सँ ओ मरणाशन्न छथि। अतः एहि राजाक माँस खेबाक हेतु हमरा लोकनि ओतए जाए रहल छी जकरा एक बेर खेला सँ छओ मास धरि भूख नहि लागत।"

राक्षसीक एहि प्रकारक वचन सुनि नैना कौतुहलवश पूछल—"राजाक रोगक मुक्ति भेला सँ राजा जीवैत रहि सकैत छथि वा नहि ?" नैनाक उत्कण्ठाक निवारणार्थ राक्षसी अत्यन्त मृदु स्वर मे बजलीह—"रोगक मुक्ति भेला सँ राजा बहुत दिन धरि जीवैत रहताह। नैना पुनः पूछल जे "हुनक रोगक मुक्ति कोना होएतैन्ह ?" प्रश्नोत्तर दैत राक्षसी बजलीह "एहि रोगक मुक्तिक हेतु राजाक माँथ मे गर्म घी सँ मालिश कए रौद मे हुनका सुताए, कान मे बाँसक एक फोफी लगाए, ओकर एक छोर तँ राजाक कान मे राखि तथा दोसर छोर पानि सँ भरल पैलक उपर राखल एक माँटिक पात्र मे राखल जेतैक। रौदक गर्मी सँ व्याकुल भए ओ कीड़ा ठंढाक हेतु कानक मार्ग सँ बाँसक फोफी होइत पैल मे खैस पड़त और राजा एहि रोग सँ मुक्ति पौताह।"

वृक्षक पोधरि मे बैसलि कीर्त्तिसेना एहि वचन केँ सुनि अत्यन्त प्रसन्न भेलीह। भोर भेला पर ओ राक्षसीक गेलाक पश्चात् ओहि वृक्षक पोधरि सँ बाहर भए ओतए सँ विदाह भए गेलीह। दुपहर मे एक व्यक्ति केँ देखल तथा ओकरा सँ पूछल जे—"ई कोन देश थिक ?" ओ व्यक्ति कहल जे—"ई राजा वसुदत्तक वसुदत्तपुर थिक। एहि ठामक राजा रुग्न भए मरणासन्न छथि।" कीर्त्तिसेना बजलीह—"जँ केओ हमरा ओहि राजाक ओहिठाम लए जाए तँ हम राजाक रोगक दवाइ कए हुनका रोग सँ मुक्ति कए देबैन्ह।" ओ व्यक्ति बाजल जे "हम ओहि नगरी जाए रहल छी अतः अहाँ हमरहिँ संग चलू।"

ओहि व्यक्तिक संग पुरुष भेषधारिणी कीर्त्तिसेना वसुदत्तपुर अएलीह। ओहि व्यक्ति सँ सभ वृत्तान्त सुनि राजाक सेवक लोकनि कीर्त्तिसेना केँ राजाक समीप लएगेलाह। राजा वैद्य केँ देखि प्रसन्न भए बजलाह जे "आइ राति हम एक स्वप्न

देखल अछि जे एक स्त्री हमरा देह पर सँ कारी-कम्बल हटाए रहल अछि और हम नीकेँ भए गेलहुँ। अतः निश्चय हम नीकेँ भए जाएब।" कीर्त्तिसेना राजा केँ आश्वासन दैत बजलीह—"कालिह अपनेक दबाइ प्रारम्भ कएल जाएत।" कीर्त्तिसेनाक एहि तरहक उक्ति सँ प्रसन्न होइत राजा कहल "जँ अहाँ हमरा रोगक मुक्ति कराएब तँ हम अपन आधा राज्य दए देब।"

प्रातःकाल भेला पर राक्षसीक मुँह सँ सुनल युक्तिक द्वारा कीर्त्तिसेना राजाक माँथक गोजर बाहर कएल तथा पौष्टिक पदार्थ सँ राजा केँ पुनः हृष्ट-पुष्ट कए देल।

रोग सँ मुक्ति पाबि राजा अपन आधा राज्य कीर्त्तिसेना केँ देबए लगलाह मुदा ओकरा द्वारा अस्वीकार कएला पर राजा हाथी, घोड़ा, स्वर्ण, वस्त्र आदि सँ कीर्त्तिसेनाक सत्कार कएलथिन्ह। रानी तथा मंत्री लोकनि सेहो पृथक-पृथक ओकर सत्कार कएल। पतिक प्रतीक्षा मे पुरुषभेषधारिणी कीर्त्तिसेना सभक उपहार केँ आपस करैत बजलीह जे "अखन ओ व्रत मे रहला सँ एहि उपहार केँ नहि ग्रहण कए पाछाँ ग्रहण करतीह तथा किछु दिनक हेतु ओ एहि नगर मे रहतीह।"

किछु दिनक पश्चात् कीर्त्तिसेना केँ ज्ञात भेलैन्ह जे ओ व्यापारीक दल जाहि मे ओकर पति देवसेनहु छथि वसुदत्तपुर आएल अछि। अतः ओ पति-मिलनक उत्कण्ठा सँ व्यापारीक मध्य गेलीह तथा पतिक चरण मे खसि पड़लीह। देवसेन पुरुषभेषधारिणी कीर्त्तिसेना केँ चीन्हि अत्यन्त विस्मित भेलाह तथा कीर्त्तिसेना केँ अपन वास्तविक रूप मे प्रकट भेला सँ व्यापारी वर्ग एवं राजा वसुदत्त केँ अत्यन्त आश्चर्य भेलैन्ह। राजा वसुदत्त सँ पुछला पर कीर्त्तिसेना अपन वृत्तान्त तथा सासुक देल कष्टक वर्णन कएल। कीर्त्तिसेनाक कथन सुनि देवसेन क्रोध, आश्चर्य, क्षमा एवं हर्ष सँ भरल अपन माए सँ विमुख भए गेलाह।

निस्सन्देह स्त्री पतिभक्तिरूपी रथ पर चढ़ि, चरित्ररूपी कवच सँ सुरक्षित भए धर्मरूपी सारथीक सहायता सँ, बुद्धिरूपी शस्त्र सँ विजय प्राप्त करैत अछि।

राजा द्वारा कीर्त्तिसेना केँ देल गेल धन, हाथी, गाँव आदि सभ धन-सम्पत्ति राजा देवसेन केँ देलथिन्ह तथा कीर्त्तिसेना केँ अपन धर्म-बहिन कहि देवसेन केँ यथोचित सत्कार कएल। देवसेन एहि धन-सम्पत्ति केँ ग्रहण कए अपन माए केँ छोड़ि वसुदत्तपुर मे रहए लगलाह तथा एहि लोक मे सुख भोगि परलोक केँ प्राप्त कएलैन्ह।

●

न्याय

एक समय वाराणसी मे एक सेठ छलाह। ओहि सेठक समस्त परिवार सत्य ओ निष्ठापूर्वक धर्मक आचरण करैत अपन जीवन व्यतीत करैत छलाह।

एक दिन सेठ विचारल जे "जँ अत्यन्त निमिष्ट व्यक्ति हमरा गृह आबथि तँ उपयोग कएल आसन ओ शय्या हुनका देब अनुचित होएत।" अतः ओ अपन उपस्थानशाला मे एक नव आसन ओ शय्या रखबा देल।

किछु दिनक उपरान्त स्वर्गक राजा विरुपक्षक पुत्री कालकण्णी तथा धृतराष्ट्रक पुत्री सिरी जल-क्रीड़ाक हेतु अनोतप्त सरोवर पर अएलीह। अनोतप्त सरोवर मे सभहक हेतु पृथक-पृथक घाट छल। तपस्वीक घाट पर तपस्वी, गृहस्थक घाट पर गृहस्थ, देवपुत्र एवं देवपुत्रिक घाट पर देवपुत्र एवं देवपुत्रिये टा स्नान करैत छलीह।

घाट पर पहुँचि दुहू कन्या परस्पर झगड़ा करए लगलीह जे "पहिने हम स्नान करब तँ हम।" कालकण्णीक कथन छल जे "हम लोकक पालन करैत छी।" सिरीक उक्ति छलैन्ह जे 'हम लोकक ऐश्वर्यदायक सम्यक कर्म मे रहैत छी।"

एहि तरहेँ वाद-विवाद करैत जखन अपना मे निर्णय नहि भए सकल जे के पैघ छथि आ के छोट तँ अन्त मे एकर निर्णयक भार ओ लोकनि महाराज धृतराष्ट्र, विरुपक्ष, वैश्रवण एवं विरुढ़क पर देलथिन्ह। धृतराष्ट्र तथा विरुपक्ष एकर निर्णय करब अस्वीकार कएल तथा एकर भार वैश्रवण एवं विरुढ़क केँ देलथिन्ह। वैश्रवन एवं विरुढ़क सेहो एकर निर्णय स्वयं नहि कए इन्द्रभगवान केँ एहि हेतु आग्रह कएलथिन्ह। अतएव कालकण्णी एवं सिरी इन्द्रक ओतए गेलीह।

इन्द्र दुहू कन्या केँ बजाए परामर्श देलथिन्ह जे "वाराणसी मे एक निमिष्ट सेठ छथि। एहि सेठक उपस्थानशाला मे बिना उपयोग कएल आसन एवं शय्या छैक। अहाँ लोकनि ओतए जाउ तथा अहाँ मे सँ जे ओहि आसन पर बैसब तथा शय्या पर सूतब ओएह पहिने स्नान करब।"

इन्द्रक कथन सुनि दुहू कन्या वाराणसीक सेठक ओहिठाम गेलीह। कालकण्णी नील वस्त्र, नील आभूषण, एवं नील रंगक माला पहिरि तथा नील रंगहिक आभा पसारैत सेठक उपस्थानशालाक दरबाजा पर ठाढ़ भए गेलीह। सेठ केँ हुनक वस्त्र एवं आभूषण प्रिय नहि लगलैन्ह। ओ कालकण्णी सँ पुछलथिन्ह जे "अहाँ के छी तथा कोन प्रयोजने अएलहुँ अछि?" कालकण्णी बजलीह जे "हम

महाराजा विरूपक्षक प्रचण्ड स्वभाववाली कारी वर्णक पुण्यरहित कालकर्णी नामक पुत्री थिकहुँ। हम अहाँक गृह रहबाक उद्देश्य सँ ऐलहुँ अछि।"

कालकर्णीक कथा सुनि सेठ उत्सुकतापूर्वक पुछलथिन्ह जे "अहाँ केहेन स्वभावक तथा आचरणक लोकक संग रहब पसन्द करैत छी?" कालकर्णी प्रश्नोत्तर दैत बजलीह जे "अकृतज्ञ, हठी, ईर्ष्यालु, कंजूस एवं व्यसनी पुरुष हमर प्रियपात्र होइत छथि। जकरा समय-ज्ञानक अभाव, उचित कहला पर क्रोध तथा दुराचार मे आसक्ति रहैछ ओ व्यक्ति हमर अराध्य होइत अछि।"

सेठ कालकर्णीक वचन सुनि उपेक्षा करैत बजलाह--"हमरा मे एहि तरहक गुण नहि अछि। अतः अहाँ कतहु अन्यत्र अपन आश्रय ताकू।"

कालकर्णीक गेलाक उपरान्त सिरी स्वर्णवर्णक वस्त्र एवं स्वर्णभूषण पहिरि सेठक उपस्थानशालाक समक्ष पीयर आभा पसारैत ठाढ़ि भए गेलीह। सेठ सिरी केँ देखि प्रसन्न भए पुछलथिन्ह जे "अहाँ के छी तथा कतए ऐलहुँ अछि?"

सेठक प्रश्न सुनि सिरी अत्यन्त मृदु एवं संकोचपूर्ण वाणी मे बजलीह जे "हम धृतराष्ट्रक कन्या सिरी थिकहुँ। लोक हमरा अत्यन्त प्रज्ञाती बुझैत अछि तथा लक्ष्मी नाम सँ संबोधन करैत अछि। हम एतए रहबाक उद्देश्य सँ ऐलहुँ अछि।"

सिरीक कथन सुनि सेठ हुनकहुँ सँ जिज्ञासार्थ पुछलथिन्ह—"अहाँ केहेन स्वभावक तथा आचरणक लोकक संग रहब पसन्द करैत छी? सिरी प्रश्नोत्तर दैत कहल जे "शीत एवं उष्णता तथा भूख एवं प्यास केँ जीति जे पुरुष अपन अर्थ केँ नहि छोड़ैत अछि ओ हमर प्रिय होइत अछि। अक्रोधी, शीलवान, मृदुभाषी, विश्वस्त तथा नम्र व्यक्ति केँ पाबि हम समुद्रक लहरि सन प्रफुल्लित भए जाइत छी।"

सेठ सिरीक वचन सुनि बड़ प्रसन्न भेलाह तथा सिरीक अभिवादन कए कहल जे "ई बिनु उपयोगक आसन एवं शय्या अहीँक हेतु अछि।" अतः सिरी ओहि आसन पर बैसि तथा शय्या पर सुति प्रातःकाल अनोतप्त सरोवर पर जाए पहिनहि स्नान कएलीह।

संगतिक फल

प्राचीन काल मे एक ब्राह्मण छलाह जे चारि भाइ रहथि। ओ चारू भाइ प्रव्रजित भए हिम्वत् प्रदेश मे पर्णशाला बनाए रहए लगलाह। हुनका लोकनिक ज्येष्ठ भाइक मृत्यु असमय मे भेलन्हि जे पाछाँ इन्द्र भेलाह।

इन्द्रक रुप मे ओ अपन भाइ लोकनिक समक्ष प्रायः आबथि तथा हुनका लोकनिक आवश्यकता कें पूर्ण करथि। एक बेर ओ अपना सँ छोट भाइक समक्ष आबि हुनका सँ पूछल जे "अहाँ कें कोन वस्तुक आवश्यकता अछि?" ओ तपस्वी कहलथिन्ह जे "हमरा आगिक प्रयोजन अछि।" अतः ओ हुनका एक कुरहरि दऽ कहलथिन्ह जे "जखन अहाँ कें आगिक आवश्यकता हो एहि कुरहरि कें रगड़ब तँ ओ लकड़ी काटब प्रारम्भ करत जाहि सँ आगि बनत।"

एकर उपरान्त ओ दोसर भाई सँ पुछलथिन्ह जे "अहाँ कें कोन वस्तुक आवश्यकता अछि?" ओ कहलथिन्ह जे "हमर पर्णशालाक समीप जंगली हाथीक उपद्रव अछि। अतः अहाँ हाथी कें एहि स्थान सँ हटेबाक यत्न करू।"

इन्द्र हुनका एक ढोल दए कहल जे "ढोलकक एक भाग कें बजौलाह सँ शत्रु पड़ाए जाएत तथा दोसर भाग कें बजौलाह सँ शत्रु मित्र बनि जाएत।"

तत्पश्चात् इन्द्र अपन सभ सँ छोट भाइक समक्ष आए पूछल जे "अहाँ कें कोन वस्तुक आवश्यकता अछि?" ओ कहलथिन्ह जे "हमरा दहीक प्रयोजन अछि। इन्द्र हुनका दहीक एक पैल दए कहलथिन्ह जे "एहि पैल कें उनटौला सँ दहिक बाढ़ि आबि जाएत।" ई कहि इन्द्र चल गेलाह।

एहि समय सँ कुरहरि ज्येष्ठ भाइ कें आगि; ढोल दोसर भाइ कें हथी सँ सुरक्षा तथा पैल तेसर भाइ कें दहीक प्रबन्ध करैत छल।

एक समय एक उजड़ल गाँव मे घूमैत एक सुगर एक दिव्य मणि कें देखल। ओ एहि मणि कें मुँह मे उठाए ओकर प्रताप सँ आकाश मध्य उड़ि समुद्रक बीच एक द्वीप मे पहुँचि विचारलक जे ओकरा ओहिठाम रहबाक चाही। अतः ओतए उतरि ओ एक गुलरिक वृक्षक समीप रहए लागल। एक दिन ओ एहि मणि कें ओहि वृक्षक समीप राखि सुति रहल।

काशीराष्ट्रक एक व्यक्ति जकरा ओकर माए-बाप निकम्मा बूझि घर सँ निकालि देने छल, एकपच्चन नामक ग्राम मे पहुँचल। ओतए ओ एक नाविकक ओहिठाम नौकरी करए लागल। एक समए ओकर नाव समुद्र बीच टूटि गेल। ओ एक लकड़ीक तख्ताक सहारा सँ ओहि द्वीप मे पहुँचल जाहि मध्य ओ सुगर रहैत छल। ओतए ओ व्यक्ति ओहि द्वीप मे फल-मूलक जिज्ञासा मे ओहि

स्थान मे आएल जाहिठाम सुगर रहैत छल तथा ओहि मणि कें उठा लेल जकरा बाहर राखि सूगर सूतल छल। मणिक प्रताप सँ ओ व्यक्ति गुलरिक गाछ पर बैसि विचारलक जे "एहि सूगर कें मारि एकर माँस खेबाक चाही।" अतः गुलरिक एक डाढ़ि तोड़ि ओहि सूगर कें मारि देल तथा ओकर माँस खाए, आकाश मार्ग सँ उड़ैत ओ ज्येष्ठ तपस्वीक आश्रम लग उतरल। ओहिठाम ओ कुरहरिक महिमा देखि तपस्वी कें कुरहरि सँ मणि बदलबाक प्रसंग मे आग्रह कएल तथा तपस्वी कें मणि दए कुरहरि लए लेल। एकर उपरान्त कुरहरि कें रगड़ि तपस्वी कें मरबाय पुनः मणि लए लेल। एहि तरहें ओ दोसर तथा तेसर तपस्वी लग जाए क्रमशः हुनक ढोल तथा दहीक थैल सँ मणि बदलि पुनः दुहू तपस्वी कें मारि, अपन मणि लए लेल। तदुपरान्त ओ वाराणसी आबि राजा कें युद्ध हेतु ललकारलक।

राजा विद्रोह कें दबेबाक हेतु एक पैघ सेना पठाओल। ओ व्यक्ति ढोल कें बजौलक जाहि सँ चारू प्रकारक सेना उत्पन्न भेल। तखन थैल कें उनटौलक जाहि सँ एक पैघ नदी बहए लागल तथा राजाक सभ सेना ओहि नदीक धार मे भासए लागल। एकर उपरान्त ओ कुरहरि के उपदेश देल जे ओ राजाक गरदनि काटि लाबए। कुरहरि राजाक गरदनि काटि अनलक। एहि तरहें ओ नगर मे प्रवेश कए, अभिषेक करबाए दधिवाहन नाम सँ राज्य करए लागल।

एक दिन ओ नदी मे जाल कें फेकबाइत छल। कर्णमुण्ड सरोवर सँ देवताक उपभोगक एक पाकल आम आबि ओहि जाल मे फँसि गेल। ओ आम थैल प्रमाणक गोलाकार एवं सोनाक रंग सन छल। राजा लोक सँ पूछल जे "ई कोन फल थिक!" लोक कहल जे "ओ आमक फल थिक।" राजा ओहि फल कें खाए ओकर आँठी अपना गाछी मे लगबाओल तथा ओहि वृक्ष कें दूध सँ पटबाओल। तेसर वर्ष अबैत ओहि वृक्ष मे फल लागि गेल जे अत्यन्त मधुर होइत छल।

राजा दोसरा राजा कें आम पठाबथि मुदा आँठी कें पहिनहि नष्ट कए देथि जाहि सँ आन राजाक द्वारा आँठी रोपला पर गाछ नहि उत्पन्न होइन्ह।

दधिवाहन राजाक एहि व्यवहार पर एक राजा कें अत्यन्त क्षोभ भेलैन्ह तथा ओ अपन माली के बजाए आदेश देल जे "दधिवाहन राजाक आमक रस कें तीत बनाओल जाए।" माली अपन स्वामीक आदेश मानि वाराणसी कें प्रस्थान कएल तथा वाराणसी आबि दधिवाहन राजा सँ कहल जे "हम असमय मे फूल फुलाए ओ फल लगाए सकैत छी।" राजा प्रसन्न भए ओकरा अपन उद्यानक निमित्त रखलथिन्ह।

माली उद्यान कें अपना अधीन मे जानि ओहि आमक गाछक चारू दिसि नीम आदि तीत गाछ रोपल जाहि संसर्ग मे आमक मधुर रस तीत भए गेल।

●

दिशाक ज्ञान

एक समय वाराणसी मे एक पंडित छलाह। एहि पंडित सँ पाँच सए छात्र विद्याध्ययन करैत छलाह। श्वेतकेतु एहि छात्र मध्य सर्वप्रधान छलाह। हुनका उँच्च ब्राह्मण-कुल मे जन्म लेला सँ आतिशय अभिमान छलैन्ह।

एक दिन श्वेतकेतु अन्य छात्रक संग नगर सँ बाहर आएत छलाह। नगर मे प्रविष्ट होएत एक चाण्डाल कें देखि ओ ओकरा सँ पुछलथिन्ह जे "तों के थिकह?" चाण्डाल बाजल "हम चाण्डाल थिकहुँ।" श्वेतकेतु कें डर भेलैन्ह जे ओहि चाण्डालक शरीर कें स्पर्श कएल बसात कतहु हुनका ने लागि जाइन्ह। अतः ओ ओहि चाण्डाल कें मारि दए ओकरा ओतए सँ दूर जएबाक हेतु कहलथिन्ह। चाण्डाल श्वेतकेतु सँ पूछल जे "अहाँ के छी तथा की अहाँ हमर प्रश्नक उत्तर दए सकैत छी!" श्वेतकेतु सगर्व प्रश्नोत्तर दैत बजलाह जे "हम एक ब्राह्मण कुमार थिकहुँ तथा तोहर प्रश्नक उत्तर अवश्य देबौक।" चाण्डाल कहल "जँ नहि दए सकब तँ राग दए कए जाए पड़त।"

चाण्डाल उपस्थित लोक कें साक्षी बनाए प्रश्न कएल "दिशा कतेक छैक?" श्वेतकेतुक उत्तर भेल—"पूर्व आदि चारि दिशा छैक।" चाण्डाल कहल "हम अहाँ सँ एहि दिशाक विषय मे नहि पुछैत छी। अहाँ जखन एतबोक बात नहि बुझैत छिऐक तखनहु हमर शरीर सँ स्पर्श भेल बसात सँ घृणा करैत छी"! एहि तरहेँ कहि श्वेतकेतुक कंधा पकड़ि हुनका झुकाए अपन रागक बीच सँ जाए देल। ब्रह्मचारी लोकनि एहि समाचार कें आचार्य कें सुनाओल।

ब्रह्मचारीक कथन सुनि आचार्य श्वेतकेतु सँ पुछलथिन्ह "की ई कथा सत्य थिक'? श्वेतकेतु चाण्डालक प्रश्नक समुचित उत्तर नहि देबाक कारणे अपन अनादरक हेतु दुखी भए सभ वृत्तान्त आचार्य सँ कहलथिन्ह तथा चाण्डाल के पुनः मारि देबए लगलथिन्ह। एहि पर आचार्य कहलथिन्ह "चाण्डाल पंडित छथि ओ अहाँ सँ एहि दिशा कें नहि पुछलैन्ह। ओ दोसर दिशा कें पुछलन्हि जे अहाँ नहि जनैत छलिऐक।

माए-बाप पूर्व दिशा, गुरु दक्षिण दिशा, पुत्र तथा स्त्री पश्चिम दिशा, मित्र उत्तर दिशा, नोकर-चाकर नीचाक दिशा तथा ब्राह्मण उपरक दिशा होइत छथि। गृहस्थ कें चाही जे प्रमादरहित भए एहि सभ दिशा कें नमस्कार करए।

एहि प्रकारेँ आचार्य श्वेतकेतु कें दिशाक ज्ञान करौलथिन्ह। श्वेतकेतु सभ शास्त्र सीखि गुरुक आश्रम सँ विदाह भए भिक्षाटन करैत एक दिन राजाङ्गण मे पहुँचलाह।

राजा ब्राह्मण कें यथोचित सम्मान कए श्वेतकेतु सँ कहल जे "संध्याकाल उद्यान मे आबि ब्राह्मण एवं तपस्वीक दर्शन करब।" श्वेतकेतु उद्यान अएलाह तथा ब्राह्मण एवं तपस्वी कें एकान्त मे कहल जे "राजा आइ उद्यान मे औताह। अतः राजा कें प्रसन्न करबाक हेतु किओ काँटक शय्या पर सुतथि किओ पानि पर चढ़थि तथा आन-आन आश्चर्यपूर्ण कार्य करथि। एहि तरहें सभ कें परामर्श दए ओ स्वयं पर्णकुटीक दरबाजा पर एक आसन पर, पाँच रंगक चमकैत वस्त्र मे लेपटाएल पोथी कें एक विचित्र रंगक पोढ़ी पर राखि चारि पाँच छात्रक प्रश्नक उत्तर दैत बैसलाह।

राजा सन्ध्याकाल उद्यान मे आबि श्वेतकेतु कें प्रणाम कए बैसलाह तथा अपन पुरोहित सँ एहि तरहें बजलाह जे "मंत्रक जप कएला सँ की लोक मानुषिक कृत्यक जानकार भए उपाय सँ मुक्त भए जाइछ?"

प्रश्नोत्तर दैत पुरोहित कहलथिन्ह—"बहुश्रुत भेलहुँ सँ पाप कएला सँ तथा धर्मक आचरण नहि कएला सँ हजार वेद पढ़निहारो बिनु आचरण केने दुख सँ मुक्त नहि भए सकैत अछि।" पुरोहितक एहि तरहक कथन कें सुनि श्वेतकेतु कहलथिन्ह "जँ हजार वेद पढ़ल बिनु आचरण केने दुख सँ मुक्त नहि होइछ तँ की वेद निष्फल एवं संयमरहित आचरण सत्य थिक?"

एहि प्रश्नक उत्तर दैत पुरोहित बजलाह जे "वेद निष्फल नहि थिक। वेद पढ़ला सँ कीर्त्तिक प्राप्ति होइछ तथा आचरण सँ शान्तिक स्थान प्राप्त कएल जाइछ।"

विश्वासघात

प्राचीन काल मे वाराणसी मे एक प्रसिद्ध डाकू छल। एहि डाकूक उपद्रव सँ लोक त्रसित भए राजा सँ निवेदन कएल जे एहि सँ लोकक रक्षा कएल जाए। राजा नगर-कोतवाल केँ ओहि डाकू केँ पकड़बाक आदेश देल।

कोतवाल ओहि डाकू केँ पकड़लक तथा राजा केँ एहि प्रसंग मे सूचना देल। राजा कोतवाल केँ आदेश देल जे ओकर सिर काटल जाए। अतः ओ ओकरा दुहू हाथ बान्हि, गरदनि मे लाल कनेरक माला पहिराए, ढोल बजाए नगर मध्य होइत वध-स्थान केँ लए जाइत छल। ओहि समय वाराणसी मे सामा नामक हजार टाका नेनिहारि एक वेश्या छलीह। ओ अपन महलक खिड़की सँ एहि डाकू केँ वध-स्थान लए जाइत देखि ओकरा स्वरूप पर आशक्त भए सोचए लगलीह जे कोना ओहि पुरुष केँ अपन स्वामी बनाबी। अतः ओ अपन दासीक द्वारा नगर-कोतवाल केँ एक हजार टाका पठौलैन्ह तथा कहयौलैन्ह—"ओ डाकू हमर भाइ थिक। हमरा छोड़ि ओकरा आन केओ सहारा नहि छैक। अतः ओ एहि डाकू केँ छोड़ि देथि।" कोतवाल कहल—"जँ एहि डाकूक स्थान पर केओ दोसर व्यक्ति आबि जाथि तँ ओकरा गाड़ी मध्य नुकाए पठाओल जाए सकैछ अन्यथा नहि।"

सामा पर आसक्त एक सेठक पुत्र प्रतिदिन सामा केँ हजार टाका दैत छल। ओ पुरुष ओहि दिन हजार टाका लए सामाक गृह पहुँचल। सामा सेठक पुत्र केँ देखि विलाप करए लगलीह। सामाक कातर वचन केँ सुनि दया सँ द्रवीभूत एवं स्नेहातुर भए सेठक पुत्र सामा सँ ओकर विषादक कारण पुछलथिन्ह। सेठ-पुत्रक वचन सुनि सामा अपन कपटपूर्ण वाणी मे बजलीह "हे स्वामी! ओ डाकू हमर भाइ थिक। हम नीच कर्म करैत छी अतः ओ हमरा ओहिठाम नहि अबैत अछि। नगर-कोतवाल सँ कहला पर ओ कहलक अछि जे हजार टाका देला पर ओ ओकरा छोड़ि देतैक। हमरा केओ नहि भेटैत अछि जे हजार टाका लए नगर-कोतवालक समीप जाएत।' सामाक वचन सुनि स्नेहवशात् सेठक पुत्र केँ दया भेलैन्ह तथा ओ हजार टाका लए नगर कोतवालक ओतए जाएब स्वीकार कए ओतए गेलाह।

कोतवाल सेठ-पुत्र केँ गुप्त स्थान मे राखि, डाकू केँ गाड़ी मे बैसाए गुप्त रूप सँ सामाक गृह पठाओल तथा सेठ-पुत्र के वध-स्थान पर लए जाए तरुआरि सँ वध कएल।

तत्पश्चात् सामा कोनो आन पुरुष सँ किछु नहि लए मात्र एहि डाकूक संग रमण करैत छलीह। सामा यद्यपि डाकूक प्रति सभ किछु करबाक लेल सतत् तत्पर रहैत छलीह मुदा ओ डाकू सोचलक—"जँ ई स्त्री कोनो आन पुरुष पर आशक्त भए जाएत तँ ओ हमरहुँ हत्या कराओत।" अतः ओ एहि स्थान सँ चलबाक उपक्रम मे विचारए लागल।

एक दिन समय पाबि डाकू सामा सँ कहल—"हे भद्रे! घर मे रहैत-रहैत मोन ऊबि गेल अछि। अतः एक दिन उद्यान क्रीड़ाक हेतु चलल जाए।" सामा एहि प्रस्ताव केँ स्वीकार कएलीह तथा नाना प्रकारक अलंकार सँ अलंकृत भए एक गाड़ी पर बैसि ओकरा संग उद्यान केँ गेलीह।

डाकू सामा केँ उद्यानक एक भाग मे लए जाए एक कनेर वृक्षक समीप आलिङ्गनार्थ ओकरा दबाए बेहोश कए देल तथा ओकर आभूषण लए उद्यानक देवाल नाँघि पराए गेल।

होश मे अएला पर सामा अपन दासी सँ पूछल—"स्वामी कतए छथि?" दासी बजलीह जे "हम नहि जनैत छी।" सामा केँ विश्वास भेलैन्ह जे "हमरा मरल जानि ओ भयभीत भए छोड़ि चल गेलाह।" अतः ओ दुःखी भए, गृह आबि भूमि पर लेटि व्याकुलतापूर्वक अपन स्वामीक प्रतीक्षा करए लगलीह। ओ हुनक पता लगेबाक अनेको यत्न कएलीह तथा नट लोकनि केँ बजाए हजारो टाका दए एक गीत सिखाए कहल जे "आर्यपुत्र एहि गीत केँ सुनताह तँ अहाँ लोकनि सँ गयक हेतु औताह। अहाँ लोकनि हुनका लए अनबैन्ह।"

नट लोकनि वाराणसी सँ किछु दूर एक प्रत्यन्त नामक गाम मे पहुँचलाह। ओ डाकू सेहो ओहि गाम मे रहैत छल। नट तमाशा करैत काल सर्वप्रथम अपन गीत मे कहल जे "अहाँ बसन्त समय मे लाल-लाल कनेरक वृक्षक बीच जाहि सामा केँ हाथ सँ दबौने छलिऐक से अहाँक कुशलाभिलाषी अछि।"।

नटक गीत सुनि डाकू ओकर अभिप्राय सँ अवगत भए नटक समीप जाए ओकरा सँ सामाक प्रसंग मे पूछल। नट सामाक सभ समाचार ओहि डाकू सँ कहल तथा आग्रह कएल जे ओ सामाक गृह शीघ्रहिँ आइथ।

नटक बचन केँ सुनि डाकू कहल—"चिरकालक प्रेमी भ्रत्स्वामी केँ छोड़ि हमरा सन आन पुरुष केँ जे अपनौलक से की दोसरा पर आशक्त नहि भए सकैछ? अतः आब हम एतहु सँ अन्यत्र जाए रहल छी। अहाँ ओकरा एहि प्रकारक बात कहबैक।"

नट सामा केँ डाकूक कथन कहल तथा ओ पश्चाताप करए लगलीह।

सत-भंग

मानव-सृष्टिक आरम्भिक अवस्था मे प्रतिष्ठानपुर मे पुरूरवा नामक एक अत्यन्त पराक्रमी राजा भेलाह। एहि राजाक शौर्यक डंका देवलोकहुँ तक बजैत छल तथा हुनक सहायताक काँक्षा युद्धभूमि मे देवराजहुँ तक कें रहैत छलैन्ह। तदर्थ ओ देवराजक अन्यतम् मित्र भए गेलाह।

एक समय देवसभा मे पुरूरवा बैसल छलाह। ओहि सभा मे अप्सराक ललामभूता, समस्त कला एवं लावण्यक आगार उर्वशीक नृत्यक आयोजन छल। दर्शक लोकनि उत्कण्ठित भए ओकर आगमनक प्रतीक्षा करैत छलाह। अकस्मात् अपन रूपक ज्योत्सनाक संग रत्नमञ्च कें प्रकाशित एवं अपन तारूण्यविकास सँ सभक हृदय कें भग्न करैत उर्वशीक पदार्पण भेल। नृत्य प्रारम्भ भेल। सम्पूर्ण सभा रस-सागर मे बहए लागल तथा उपस्थित दर्शक ओकर अप्रतिभ सौंदर्य एवं नृत्यकला पर हर्ष सँ ओत-प्रोत भए गेलाह।

उर्वशीक कलरव कण्ठ सँ मानव नृपति पुरूरवाक हृदय सेहो झंकृत भए गेल। उर्वशी हुनक चित्त कें आन्दोलित कए देल तथा ओ उर्वशीक इन्द्रजालक समक्ष अपन धैर्य कें छोड़ि ओकरा सँ भूतलक अधीश्वरी बनबाक आग्रह कए देल-थिन्ह।

प्रतिष्ठानपुरक प्रतापी नरेशक अभिप्राय जानि जनिक शौर्य-सूर्य सँ तीनू लोक प्रोद्भासित होइत छल; सभ असमंजस मे परि गेलाह। स्वर्गक सर्वोत्कृष्ट कला एवं लावण्यक आगार स्वर्ग कें श्रीहीन कए भूतलक शोभाक वृद्धि कोना कए सकैछ ! मुदा पुरूरवाक इच्छा जे छल ! जनिक अनुग्रह पर इन्द्रासनक सुरक्षा निर्भर छल। अतएव देवताक सम्मति भए गेल।

ओम्हर उर्वशीक अवस्था सेहो विचित्रे छल। पुरूरवाक कान्तिमान मुख-मण्डल, वीर्यवान शारीरिक संगठन एवं पृथ्वीक द्वन्द्वात्मक जीवन सुख-दुखक संयोग की ओकरा उपलब्ध भए सकतैक ?

उर्वशी राजाक आग्रह पर भूतलक अधिष्ठात्री बनबाक हेतु तँ उद्यत भए गेलीह मुदा ओ पुरूरवा सँ तीन गोट सत राखल जे ओ सदा घीक पान करतीह; दू गोट भेंड़ी सतत् रखतीह तथा राजा कें शय्याक अन्यत्र वस्त्रहीन नहि देखतीह। एहि सत मे सँ एको गोट सतक भंग भेला पर ओ पुनि ओतए सँ स्वर्ग प्रस्थान कए जेतीह।

ओहि तीनू सत कें स्वीकार कएला पर उर्वशी महाराज पुरूरवाक संग भूतल पर अएलीह। लक्ष्मी एवं विनय सन देव-मनुष्यक समागम कें देखि लोक हर्षोत्फुल्ल भए गेल।

राजभवन मे उर्वशीक मान-मर्यादा बढ़ए लागल। सौंदर्यक राशि एवं कलाक आग कें प्राप्त कए भूतल स्वर्ग बनि गेल तथा स्वर्ग वैभवहीन भए उजड़ल कानन सन प्रतीत होमए लागल। ओ अमोघ अस्त्र जे यति-मुनिक वज्रसन कठोर हृदय कें स्नेह सँ द्रवित कए दैत छलीह; जे अपन उत्कृष्ट कला एवं लावण्य कान्ति सँ सम्पूर्ण सभा कें प्रदीप्त करैत छलीह ओहि रत्न सँ हीन भए देवता ओकरा पुनि प्राप्त करबाक उद्योग मे लीन भए गेलाह। मुदा पुरूरवा तथा उर्वशीक अगाध प्रेमक स्मरणमात्रहिं सँ ओ लोकनि विचलित भए प्रपञ्चक सहारा लेलैन्ह तथा उर्वशिक सत कें तोड़बाक उपक्रम करए लगलाह।

एक समय महाराज पुरूरवा अपन प्रियतमा उर्वशीक संग सूतल छलाह। समीप मे उर्वशीक दुइ भेड़ी बान्हल छल। एहि अभ्यन्तर गन्धर्व एक भेड़ी कें चुराए लए गेल मुदा पुरूरवा धैर्यपूर्वक शय्या पर पड़ले रहलाह। तदुपरान्त ओ पुनि दोसर भेड़ी कें चुराए लए गेल। भेड़ी जोड़ सँ मेमियाए लागल। उर्वशी अपन प्रिय वस्तुक अपहरण जानि क्रन्दन करए लगलीह। उर्वशीक क्रन्दन सुनि पुरूरवाक धैर्यक बान्ह टूटल। समय असमयक ध्यान नहि रहल तथा ओ बिनु वस्त्रे गन्धर्व सँ बलपूर्वक भेड़ी के लए तँ अनलैन्ह मुदा देवता लोकनि बिजुली चमकाए हुनक वस्त्रहीन शरीर उर्वशी कें देखाए देल। उर्वशीक सत भंग भए गेल। ओ तत्क्षणे आकाश मे उड़ि अलक्षिता भए गेलीह।

उर्वशीक विरह मे पुरूरवा उन्मत्त भए दिन राति घूमए लगलाह तथा अन्त मे मानसरोवरक समीप पहुँचलाह। ओतए ओ अपन प्रियतमा कें हँसिनीक रूप धारण कए अपन सखीक संग जल-विहार करैत देखलथिन्ह। ओ उर्वशी कें चीहि स्नेहातुर भए निवेदन कएल जे "हे उर्वशी! अहाँ कठोर भए हमरा छोड़ि चल गेलहुँ। कनेक गपो तँ कए लिअ।"

उर्वशी पुरूरवाक स्नेहपूर्ण वचन सुनि निःस्पृह भए उत्तर दैत बजलीह—"हे महाराज! आब हमर-अहाँक मिलन सँ की भए सकैछ? हम तँ आब अहाँ सँ एहि तरहेँ पृथक भए गेल छी जेना पूर्वक उषा कें नव उषाक संग पुनर्मिलन नहि भए सकैछ।"

उर्वशीक निःस्पृह वाणी कें सुनि पुरूरवा अपन दीनता कें प्रकट करैत मानिनी जानि बजलाह—"हे प्रिये! अहाँक विरह मे हमर विचित्र स्थिति भए गेल अछि। आब हम तेहेन ने अयोग्य भए गेल छी जे तरकस सँऽ हमरा सँ बाणो धरि

नहि निकालल होइत अछि तथा राज्य-कार्यहुँ मे हमरा मोन नहि लगैछ।" पुरूरवाक आतुर वचन कें सुनि उर्वशी अपन असमर्थता प्रकट करैत बजलीह—"हे नाथ! अहाँ तँ सभ तरहें हमर सत्कार करैत छलहुँ तथा हमर तुष्टिक हेतु सतत् प्रयत्न करैत छलहुँ मुदा आब एहि सँ की भए सकैछ। आब अहाँ हमरा मिलनक उत्कण्ठा कें छोड़ि अपन गृह चल जा।।"

उर्वशीक निराशापूर्ण वचन कें सुनि पुरूरवा अपन कातरता कें प्रकट करैत पुनि आग्रह करैत बजलाह "हे प्रिये! अहाँ हमरा अपन स्नेहक तृषित छोड़ि अपन सुवर्णि, सुम्नआपि तथा हृदयचक्षु आदि सखिक संग चल गेलहुँ। तथा हम अहाँक विरहक संताप मे विलाप कए रहल छी।" पुरूरवाक उन्मत्त विलाप कें सुनि उर्वशी हुनका ढाढ़स दैत बजलीह—"हे राजन्! अहाँक यश मे नभोमण्डल सँ दिव्य देवपत्नी आबि अहाँक गुणानुवाद करैत छथि तथा अहाँक शौर्य सँ प्रसन्न भए देवता अहाँ कें समर भूमि मे सहायता करैत छथि तखन अहाँ एक साधारण अप्सराक हेतु एहि तरहें कातर भए रहल छी? एहि सभ सँ आब किछु नहि भए सकैत अछि। अतएव अहाँ अपन गृह जाउ।"

पुरूरवा उर्वशीक एहि तरहक कठोर वचन कें सुनि अपन असमर्थता प्रकट करैत बजलाह—हा भाग्य! जखन हम एहि दिव्य अप्सरा कें अपन बाहुपाश मे पकड़बाक अभिप्राय सँ हाथ बढ़बैत छी कि ओ ओहि तरहें दूर भए जाइछ जाहि तरहें व्याध सँ हरिण तथा सारथी सँ घोड़ा होइत अछि।"

पुरूरवाक वचन कें सुनि उर्वशी हुनक आक्षेपक समर्थन करैत बजलीह—"हे महाराज! अप्सरा मायाविनी होइछ। ओ प्रपञ्चपूर्ण स्नेह सँ ठकि अपन स्वार्थक पूर्त्ति करैत अछि। अतएव आब अहाँ ओकर ध्यान अपन मोन सँ हटाए दिअ।" उर्वशीक कथन सुनि पुरूरवा शोकातुर भए कहल जे—"हे उर्वशी ओ दिन कहिया औतैक जखन अहाँक गर्भ सँ उत्पन्न भेल पुत्र कें देखि हम दीर्घायु भए सकब?"

पुरूरवाक प्रश्नक उत्तर दैत उर्वशी बजलीह "हे महाराज! अहाँ पृथ्वीपति छी। अहाँ हमरा उदर मे गर्भ स्थापित कएने छी। जखनहि ओ उत्पन्न होएत तखनहि हम अहाँ कें समर्पण कए देब।" उर्वशीक एहि वचन कें सुनि पुरूरवा खिन्न होइत बजलाह—"हे उर्वशी! की ओ नेना अपन माएक अभाव मे कानत नहि? कोन नेना कें अपन माएक अभावक कष्ट नहि होइछ?" पुरूरवाक एहि कथन कें सुनि उर्वशी अप्रतिभसन होइत बजलीह—"हे राजन्! ओ नेना ने तँ कानत आ ने ओ अपन नोर बहाओत। हम सतत् ओकर कल्याण करैत रहबैक। आब अहाँ उटपटाँग गप नहि कए अपन गृह चल जाउ।"

उर्वशीक अप्रतिभ वचन कें सुनि पुरूरवा अपन दृढ़ संकल्प कें सुनबैत

बजलाह "हे उर्वशी अहाँक संग रमण केनिहार अहाँक पति केँ मृत्युए एहि स्थान सँ हटा सकैछ।" एहि संकल्प केँ सुनि पुनि पुरूरवा केँ बुझबैत ओ बजलीह—"हे राजन्! स्त्रीक मित्रता स्थाई नहि होइछ। स्त्रीक प्रेम ज्वार-भाटासन घटैछ एवं बढ़ैछ। ओकर हृदय मोमसन कोमल एवं वज्रसन कठोर होइछ। अतएव प्रज्ञाशील पुरुष कामिनीक नेत्रक कटाक्ष एवं स्नेहक गरल सँ सतत् अपना केँ पृथक रखैत छथि। हम अपन सहज अप्सरारूप केँ छोड़ि नाना प्रकारेँ अहाँक संग चारि वर्ष धरि रमण कएल। ओहि समय हम दिन मे महज एक बेर घी पीबि विचरण करैत छलहुँ। अतएव अहाँ हमर कहब मानि अपन गृह केँ प्रत्यागमन करू।"

उर्वशीक एहि वचन केँ सुनि पुरूरवा आवेश मे आबि बजलाह—"अपन ज्योत्स्ना सँ अन्तरिक्ष केँ प्रकाशित केनिहारि एवं समस्त मधुरिमाक आगार उर्वशी केँ छोड़ि हम कथमपि नहि जाए सकैत छी। अतएव हे उर्वशी! अहाँ हमर संग पुनि आपस चलू अन्यथा अहाँक बिना हमर जीवन असम्भव थिक।"

पुरूरवाक उद्विग्न वाणी केँ सुनि उर्वशी कहए लगलीह—"हे राजन्! समस्त देवता कहैत छथि जे एहि लोकक सुख भोगि अहाँ स्वर्गसुखक उपभोग करब। अतएव अहाँ धैर्य धारण कए किछु दिन ओतए रहू तदुपरान्त पुनि स्वर्ग मे हमरा सँ समागम तँ होएबे करत।"

उर्वशीक निराशापूर्ण वचन सुनि पुरूरवा अपन प्राणार्पणक हेतु उद्यत् भए गेलाह। हुनक एहि दशा केँ गंधर्व लोकनि केँ नहि देखल गेलैन्ह। ओ पुरूरवाक व्यथा सँ द्रवित भए हुनका हाथ मे अग्नि दए कहल जे "हे राजन्! अहाँ अग्नि केँ आहूति दए विधिवत् आराधना करू। अग्निक तुष्टि सँ उर्वशी अहाँ केँ पुनि प्राप्त भए जेतीह।"

पुरूरवा अग्नि लए तँ चललाह मुदा ओ निराश भेला संता विचारलैन्ह —"जखन ओ सम्मुख आबि हमरा संग नहि अएलीह तँ अग्निक आराधना सँ कतहु आबथि।" अतएव अग्नि केँ ओ ओतहि छोड़ि अपन गृह आपस तँ अएलाह मुदा अग्नि केँ छोड़ला सँ पछताए ओ फेर वन मे अग्नि लेबाक हेतु गेलाह किन्तु अग्नि तावत शान्त भए गेल छलाह तथा महज काठ मात्र अवशिष्ट रूप मे बाँचल छल। पुरूरवा ओहि काठ केँ संचित कए गृह आनल तथा पुनि ओहि सँ अग्नि उत्पन्न कएलैन्ह।

पुरूरवा अग्नि केँ दाक्षिणाग्नि, गार्हपत्याग्नि तथा आवाहनीयाग्नि तीन रूप मे विभक्त कए, विधिवत् उपासना कए समयानुसार सुरलोक केँ अलंकृत कएलैन्ह जतए उर्वशी पूर्वहिँ सँ हुनक स्वागत मे ठाढ़ि छलीह।

शील भंगक दोष

प्राचीन समय मे कलिङ्ग राष्ट्रक दन्तपुर नगर मे कलिङ्गराज नामक एक राजा छलाह। एहि राजाक राज्य मे वर्षा नहि भेला सँ भयंकर अकाल पड़ल।

लोक अन्न-जलक अभाव सँ व्याकुल भए दन्तपुर जाए राजा सँ निवेदन कएल। लोकक व्याकुलता जानि राजा आमात्य सँ पूछल जे "वर्षा नहि भेला सँ पूर्व मे राजा लोकनि की करैत छलाह?" आमात्य कहलथिन्ह जे "पूर्व मे राजा लोकनि दान दए, व्रत कए, शयनागार मे प्रविष्ट भए एक सप्ताह धरि भूमि पर लेटि वर्षाक हेतु। इन्द्रक प्रार्थना करैत छलाह।" राजा एहि अनुसार कार्य कएलैन्ह। मुदा वर्षा नहि भेल। राजा पुनः आमात्य सँ पूछल जे "हम तँ अपन कर्त्तव्य कएल मुदा वर्षा नहि भेल। अतः आब की कएल जाए?" आमात्य कहल जे इन्द्रप्रस्थ नगर मे धनञ्जय नामक नरेश कें अञ्जनवसन नामक मङ्गल हाथी छैन्ह। एहि हाथी कें अनला सँ वर्षा होएत।" राजा पूछल जे "ओ राजा सेना तथा वाहन सँ युक्त छथि तखन हुनक हाथी कोना आनल जाए सकैछ?" आमात्य कहल जे "ओ राजा दानी छथि। माँगला सँ ओ अपन शीश, सुन्दर नेत्र एवं विशाल राज्य तक दए सकैत छथि, हाथीक कोन कथा। अतः ब्राह्मण कें बजाए हाथी याचनाक हेतु पठाओल जाए।"

राजा आमात्यक कथनानुसार आठ ब्राह्मण कें बजाए, सम्मान ओ सत्कार कए हाथी याचनाक हेतु इन्द्रप्रस्थ नगर कें पठाओल। ब्राह्मण लोकनि इन्द्रप्रस्थ जाए राजाक अतिथिशाला मे राजाक आगमनक प्रतीक्षा करए लगलाह।

राजा स्नान कए नाना प्रकारक अलंकार सँ अलंकृत भए एक श्रेष्ठ हाथी पर चढ़ि अतिथिशाला मे प्रविष्ट भेलाह। ब्राह्मण लोकनि राजा कें अभिवादन कए हाथीक याचना कएल। राजा प्रसन्नतापूर्वक हाथी ब्राह्मण लोकनि कें दए विदाह कएल। ब्राह्मण हाथी आनि राजा कें देल। मुदा हाथी कें एलहुँ पर वर्षा नहि भेल। अतः राजा पुनः आमात्य सँ पूछल जे "आब की कएल जाए।"

आमात्य कहल जे "राजा धनञ्जय कुरुधर्मक पालन करैत छथि। अतएव हुनका राज्य मे समयानुसार वर्षा होइत अछि।" राजा पुनः ब्राह्मण लोकनि सँ कहल जे "राजा धनञ्जय कें हाथी आपस कए देल जाए तथा कुरुधर्म कें सोनाक तख्ती पर लिखबा कए आनल जाए।" ब्राह्मण लोकनि राजा धनञ्जय सं कुरुधर्मक हेतु प्रार्थना कएल। ब्राह्मणक अनुनय सुनि व्यथित भए राजा धनञ्जय कहल जे "हे ब्राह्मण सत्ये हम कुरुधर्मक पालन करैत छलहुँ मुदा हमरा मोन मे एहि प्रसंग मे अनुताप अछि।

आब कुरुधर्म हमरा चित्त कें प्रसन्नता नहि दैत अछि। अतः हम कुरुधर्म कें अहाँ लोकनि कें नहि दए सकैत छी।" राजाक एहि तरहक वचन कें सुनि उत्सुकतापूर्वक ब्राह्मण लोकनिक आग्रह कएला पर राजा बजलाह जे "प्रति तेसर वर्ष कार्तिक मास मे कार्त्तिकोत्सव मनाओल जाइछ। एहि अवसर पर राजा लोकनि अलङ्कार सँ अलकृत भए चहुँदिशि चित्रित वाण फेकैत छथि। हमहुँ एहि उत्सवक अवसर पर एक समय चहुँदिसि वाण फेकल। तीन दिशाक वाण तँ देखल गेल मुदा एक पोखरि मे फेकल वाण नहि देखल गेल। अतः हमरा मोन मे अनुताप अछि जे ओ वाण माँछक पेट मे प्रविष्ट भेल ताहि सँ ओहि प्राणीक हिंसा भए गेल। अतः हमर मोन प्रसन्न नहि रहैत अछि तथा कुरुधर्मक प्रसंग मे हमरा अनुताप अछि। मुदा हमर माए एहि धर्म कें नीक जकाँ पालन कएलैन्ह अछि। अतः अहाँ लोकनि हुनका सँ एहि धर्म कें ग्रहण करबाक प्रयास करू।"

ब्राह्मण लोकनि राजा सँ विदाह भए हुनक माएक ओतए जाए कुरुधर्मक प्रसंग मे हुनका सँ निवेदन कएल। ब्राह्मणक प्रश्नक उत्तर दैत ओ बजलीह—"हे ब्राह्मण। सत्ये हम कुरुधर्मक पालन करैत छलहुँ। मुदा आब हमरा एहि प्रसंग मे अनुताप अछि। अतः हम अहाँ लोकनि कें एहि धर्म कें नहि दए सकैत छी।"

ब्राह्मण लोकनिक पुछला पर राजाक माए कहल जे "हमरा दुइ गोट पुत्र छथि। ज्येष्ठ पुत्र राजा तथा कनिष्ठ उपराजा छथि। एक राजा हमरा एक लाख टाकाक मूल्यक चन्दनहार तथा हजार टाकाक मूल्यक सोनाक माला पठौलैन्ह। हम विचारल जे एहि दुहू माला कें अपन दुहू पुतोहु कें दए दी। पुनः हम विचारल जे हमर ज्येष्ठ पुतोहु तँ ऐश्वर्यवान एवं पटरानी छथि तथा कनिष्ठ पुतोहु दरिद्र छथि। अतः ज्येष्ठ कें सोनाक माला तथा कनिष्ठ कें चन्दनहार देल। एहि दुहू माला कें देलाक उपरान्त विचारल जे हम तँ कुरुधर्मक पालन केनिहारि छी। हमरा हेतु तँ दुहू समान छल तथा हमरा तँ ज्येष्ठक अधिक आदर करबाक छल। अतएव मोन प्रसन्न नहि रहैत अछि। अतः अहाँ लोकनि हमर पुतोहु सँ कुरुधर्म कें ग्रहण करबाक यत्न करु।"

राजाक माएक कथनानुसार ब्राह्मण लोकनि पटरानीक ओतए जाए हुनका सँ पूर्वोक्त ढंग सँ कुरुधर्मक हेतु याचना कएल मुदा ओहो पूर्वोक्त जकाँ उत्तर देल जे "एक दिन हम भरोखा मे बैसलि राजाक नगरक प्रदक्षिणा करैत हाथी पर चढ़ल उपराजा कें देखि मोहित भए सोचल जे जँ हम हिनका संग सहवास करब तँ भाइक मृत्युपरान्त राज्य पर प्रतिष्ठित भेला पर ई हमर सत्कार करताह। एकर पश्चात् विचारल जे स्वामीक अछैत परपुरुष पर कुभावना सँ देखल। अतएव मोन प्रसन्न नहि अछि। अतः अहाँ लोकनि उपराजा सँ एहि धर्म कें ग्रहण करबाक चेष्टा करु।"

ब्राह्मण लोकनि उपराजाक समीप जाए पूर्वोक्त प्रकारेँ कुरुधर्मक याचना कएल। उपराजा कहल जे "हम प्रतिदिन सन्ध्या केँ राजाक सेवा मे जाइत छलहुँ। जाबत हम राजाक ओहिठाम सँ आपस नहि अबैत छलहुँ तावत हमर सेवक राजद्वारक समक्ष ठाढ़ रहैत छलाह। हम एक दिन राजभवन मे गेलहुँ तथा हमर सेवक राजभवनक द्वार पर ठाढ़ रहलाह। वर्षा भए रहल छलैक। राजा हमरा ओतहि रोकि लेलैन्ह तथा हमर सेवक समग्र रात्रि पानि मे भीजैत ठाढ़ रहलाह। अतएव हमर शील भंग भए गेल। अतः अहाँ हमरा पुरोहित सँ एहि हेतु याचना करू।" पुरोहित सँ याचना कएला पर पुरोहित कहल जे "एक दिन राजाक सेवा मे हम जाए रहल छलहुँ तथा देखल जे एक राजा हमर राजाक हेतु लाल वर्णक एक रथ पठौने छलाह। हमरा मोन मे एहि रथक हेतु मोह उत्पन्न भए गेल। राजाक सेवा मे गेला पर राजा यद्यपि एहि रथ केँ हमरा देबाक हेतु इच्छा कएलैन्ह मुदा हम अस्वीकार कएल। अतएव हमर शील भंग भए गेल। अतः एहि हेतु अहाँ लोकनि अामात्य सँ आग्रह करू।"

ब्राह्मणक द्वारा याचना कएला पर अामात्य कहल जे "एक दिन हम खेतक नापी करैत छलहुँ। लग्गी मे बान्हल डोरीक एक भाग तँ खेतक मालिकक हाथ मे छल तथा दोसर हमरा हाथ मे। जाहि खोंट केँ हम पकड़ने रही ओ एक कँाकोड़क बिहरि पर छल। हम विचारल जे लग्गी कँाकोड़क बिहरिक भीतर जेतैक तँ एहि मे रहनिहार जीवक मृत्यु होएतैक तथा आगाँ जेतैक तँ राजाक हकक हनन होएतैक। अन्त मे हम कँाकोड़क बिहरि मे लग्गी देबे उचित बूझल जाहि सँ कँाकोड़क मृत्यु भए गेलैक। अतएव हमर शील भंग भए गेल। अतः अहाँ नगर वेश्याक ओहिठाम जाए कुरुधर्मक याचना करू।" ब्राह्मण लोकनि तत्पश्चात् नगर-वेश्या सँ पूर्वोक्त प्रकारेँ याचना कएल तथा वेश्या कहल जे "एक समय इन्द्र एक युवकक भेष मे हमरा ओहिठाम अएलाह तथा एक सहस्र मुद्रा दए पुनः देवलोक केँ चल गेलाह ई कहि जे ओ फेर औताह। तीन वर्ष धरि नहि अएलाह। हम अपन शीलक भंगक भए सँ तीन वर्ष धरि कोनो आन पुरुषक पानो धरि नहि ग्रहण कएल। क्रमशः हम अत्यन्त दरिद्र भए गेलहुँ। अतः न्यायालय जाए निवेदन कएल जे आब हम की करू। न्यायालय सँ हमरा परामर्श भेटल जे हम आब अधिक दिन एहि पुरुषक खेल नहि रूकि दोसरा सँ अपन निर्वाहक प्रयत्न करी। न्यायालय सँ बाहर होइतहि एक पुरुष एक सहसक थैली प्रस्तुत कएल। एहि थैली केँ ग्रहणक हेतु हम जखने हाथ पसारल कि इन्द्र भगवान प्रकट भए गेलाह। हम हुनका देखितहिँ अपन हाथ खीँचि कहल जे तीन साल पूर्वक हजार देनिहार पुरुष आबि गेलाह। अतः आब हमरा अहाँक टाकाक प्रयोजन नहि अछि। अतः हमर शील भंग भए गेल।"

एवंकमें सभक कथा सूनि ब्राह्मण लोकनि क्रमशः हुनका लोकनिक ओतए जाए अनुनय करैत बजलाह जे "अहाँ लोकनि मे सँ किनकहु शील भंग नहि भेल अछि। अतः हमरा लोकनि कें कुरुधर्मक उपदेश एहि सोनाक तख्ती पर लिखबाक कष्ट करी।" ब्राह्मणक आग्रह कएला पर ओ लोकनि कुरुधर्म कें सोनाक तख्ती पर लिखि हुनका लोकनि कें कृतार्थ कएल जकरा दन्तपुर आनि राजा कें समर्पण सँ कएला वर्षा भेल।

लेखकक अन्य कृत ग्रन्थ

१. महाकवि विद्यापति नाटक—विद्यापतिक जीवन पर आधारित सरल भाषा, सुललित भाव एवं तथ्यपूर्ण कथनोपकथनक अपूर्व मैथिलीक नाटक। मूल्य २) टाका मात्र।

२. कन्दर्पीघाट नाटक—खण्डवलाकुलोद्भव राजा नरेन्द्र सिंह ओ पटनाक शासक रामनारायण शुक्लाक मध्य भेल युद्ध पर आधारित राष्ट्रीय भावना, ओजस्वी भाषा एवं सरस साहित्य मे मैथिलीक नाटक। मूल्य १) टाका मात्र।

३. शास्त्रार्थ नाटक—शंकराचार्य, मण्डनमिश्र एवं भारतीक मध्य भेल शास्त्रार्थ पर आधारित दार्शनिक तथ्य कें सरस ओ मनोरञ्जक रूप मे प्रतिपादित मैथिलीक नाटक। मूल्य १) टाका ५० पैसा मात्र।

४. विद्याधर-कथा—कथासरित्सागर मध्य वर्णित मूल कथा कें सरस, सुललित, मनोरञ्जक एवं प्रभावोत्पादक रूप मे परिवर्त्तित ओ परिमार्जित मैथिली मे अत्यन्त रोचक कथा। मूल्य २) टाका मात्र।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

ग्रन्थालय,

टावर चौक, दरभंगा

एवं

श्री अमरनाथ झा

द्वारा—बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना–१